।।   नमः शिवाय।।

तृतीय अध्याय

;सृष्टि खण्डद्ध

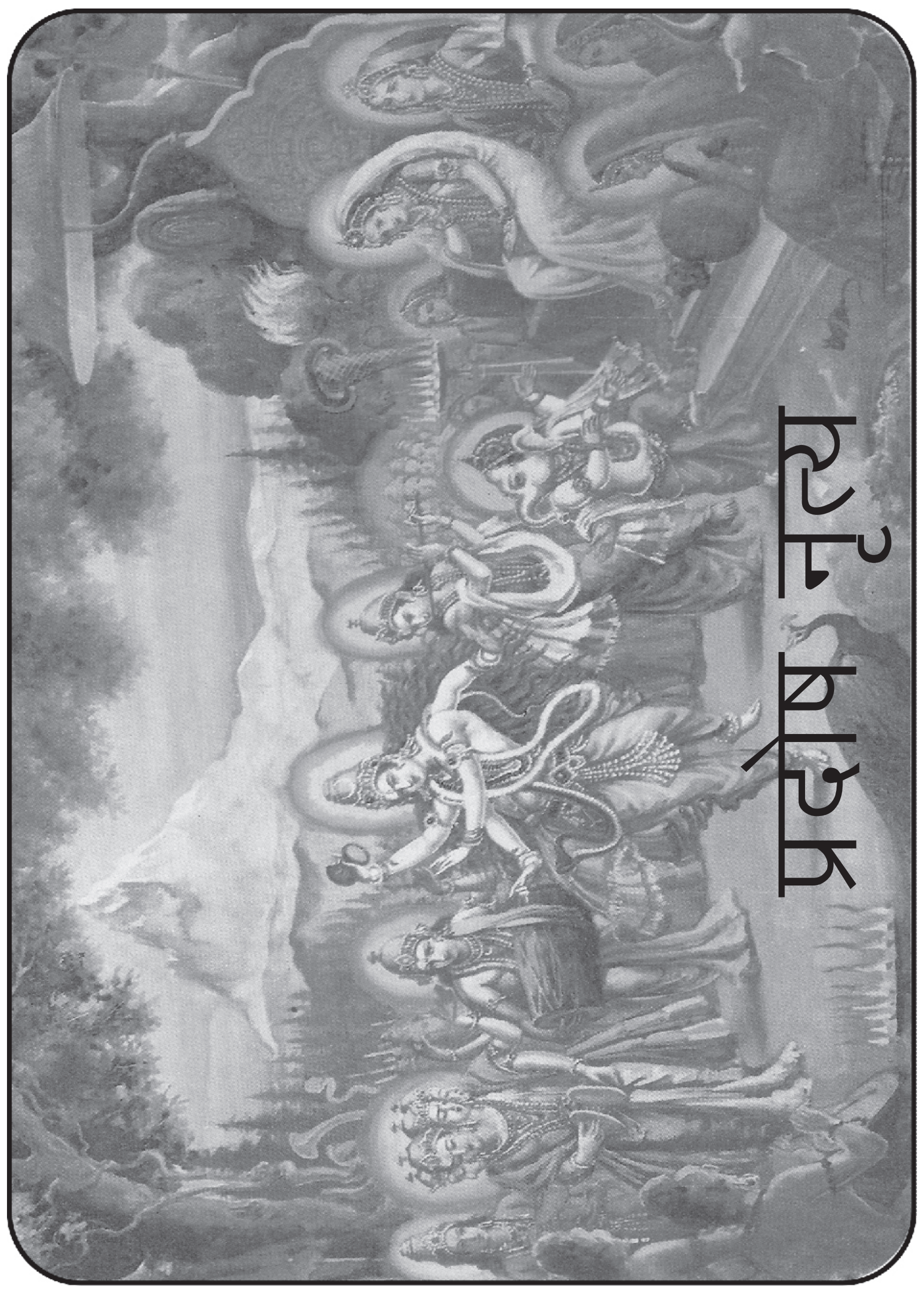

ध्यान

जगद्गुरो नमस्तुभ्यं शिवाय शिवदाय च।
योगीन्द्राणां च योगीन्द्र गुरूणां गुरवे नमः।।1।।
मृत्योमृत्युस्वरूपेण मृत्युसंसारखण्डन।
मृत्योरीश मृत्युबीज मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।।2।।
कालरूपं कलयन्तां काल कालेश कारण।
कालादतीतं कालस्य काल काल नमोऽस्तु ते।।3।।
गुणातीत गुणाधार गुणबीज गुणात्मक।
गुणीशं गुणिनां बीज गुणिनां गुरवे नमः।।4।।
ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मज्ञ ब्रह्मभावनतत्पर।
ब्रह्मबीज स्वरूपेण ब्रह्मबीज नमोऽस्तु ते।।5।।

हे विश्व आधार गौरीपतीश्वर,
कल्याण कर्त्ता त्रैलोक्य स्वामी।
हो तुम गृहस्थों के मार्गदर्शक,
सर्वेश शंकर गिरिजा नमामी।।
भव दोष हारक शिव शक्ति अर्चन,
मंत्र मृत्युजंय भय काल हर्ता।
जन भक्त वत्सल भव रोग भक्षक,
सर्वेश शंकर गिरिजा नमामी।।
हे काल के काल शुभ काल दर्शक,
कालेश कारण निर्माण कर्त्ता।
जीवन जगत ज्योति शुभ कर्म प्रेरक,
सर्वेश शंकर गिरिजा नमामी।।
निर्गुण गुणाधार गुण बीज सद्गुण,
गुणज्ञ गुणवान गौरव प्रदाता।
हे जग गुणेश्वर मुझ पर कृपा कर,
सर्वेश शंकर गिरिजा नमामी।।
ब्रह्मबीज ब्रह्मत्व ब्राह्मण सुरक्षक,
ब्रह्मरूप ब्रह्ममय सब यज्ञ रूपा।
हे विश्व ब्रह्मादि संसार कारण,
सर्वेश शंकर गिरिजा नमामी।।

ॐ श्री गणेशाय नमःॐ

नमः शिवाय नमः शिवायै

शिव शक्ति कथा

तृतीय अध्याय ;सृष्टि खण्डद्ध

ॐ नमः शिवाय

मंगल वन्दना

एक दंष्ट्राय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो बुद्धिः प्रचोदयात्।
भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि।
तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।
भूर्भुवः स्वः तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो योनः प्रचोदयात्।

नमः शिवाभ्यां रथ वाहनाभ्यां,
रवीन्दुवैश्वानर लोचनाभ्याम्।
राकाशशांकाभमुखाम्बुजाभ्यां,
नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।1।।
नमः शिवाभ्यां जटिलन्धराभ्यां,
जरामृतिभ्यां च विवर्जिताभ्याम्।
जनार्दनाब्जोद्भव पूजिताभ्यां,
नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।2।।
नमः शिवाभ्यां विषमेक्षणाभ्यां,
विल्वच्छदामल्लिकदामभृद्भ्याम्।
शोभावती शान्तवतीश्वराभ्यां,
नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।3।।
नमः शिवाभ्यां पशुपालकाभ्यां,
जगत्त्रयीरक्षाणबद्धहृद्भ्याम्।
समस्त देवासुरपूजिताभ्यां,
नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।4।।

नमन्ति ऋषयो देवा नृत्यन्त्यप्सरसां गणाः।
नरा नमन्ति देवेशं नकाराय नमो नमः।।5।।
सर्वज्ञता तृप्तिरनादिबोधाः,
स्वतन्त्रता नित्यमलुप्त शक्तिः।
अनन्त शक्तिश्च विभोर्विदित्वा,
षडाहुरंगानि महेश्वरस्य।।6।।
तन्मात्राणि मन आत्मा च तानि,
सूक्ष्माण्याहुः सप्त तत्वात्मकानि।
या सा हेतुः प्रकृतिः सा प्रधानं,
बन्धः प्रोक्तो विनियोगोऽपितेन।।7।।
या सा शक्तिः प्रकृतौ लीनरूपा,
वेदेषूक्ता कारणं ब्रह्मयोनिः।
तस्या एकः परमेष्ठीपरस्ता–
न्महेश्वरः पुरुषः सत्यरूपः।।8।।
उपहरणं विभवानां संहरणं सकल दुरित जालस्य।
उद्धरणं संसाराच्चरणं वः श्रेयसेऽस्तु विश्वपतेः।।9।।
भिक्षुकोऽपि सकलेप्सितदाता प्रेतभूमिनिलयोऽपि पवित्रः।
भूतमित्रमपि योऽभयसत्री तं विचित्र चरितं शिवमीडे।।10।।

अक्षर ब्रह्म अखिलेश हरि, सहित शिवा शिव एक।
अष्टसिद्धि नव निधि जगत, रवि शशि प्राण विवेक।।1।।
अष्ट मूर्ति शिव पंचमुख, ग्यारह रुद्र स्वरूप।
यज्ञ अगिन लय शान्त छबि, सृष्टि रूप अनुरूप।।2।।
आप शक्ति सुर रूप त्रय, आदि अन्त वर्तमान।
चेत अचेतन शब्द स्वर, लीन न जासु निशान।।3।।
जिमि पावक बल जारि जग, सृजत तत्वानन्द।
शिवम भक्ति तिमि नाशि अघ, परसत लोकानन्द।।4।।
लोक बीज मृत्यु बीज शिव, सगुण बीज सुख बीज।
वेद बीज कल्याण करु, जो उर अघ दुख सीज।।5।।

जेहि विधि बनइ जगत कल्याना। देहु सो बल मति दयानिधाना।।
जय जय कृपा सिन्धु सुखदाई। बिछुड़ु न जनम कोउ भगताई।।
रचत आपु घर जेस कृमि मकड़ी। नयन हीन सर्वस बल लकड़ी।।
ताहि भांति प्रभु मोहि सवाचा। बनइ न जौन सोउ तुम रांचा।।
नहि जानउं महिमा गुण ज्ञाना। रहत बाझि मन अवगुण ध्याना।।
विनवउं बार बार त्रिपुरारी। जग जीवन जगती महतारी।।

आदि अन्त सृष्टी सब में ही। दूज दिखात न इक तुमें ही।।
करि प्रभु कृपा आश दिन राती। गुंजत ह्रदय मन भंवरा भांती।।
लोक रूप सर्वस शिव रूपा। महिमा अद्भुत अतुल अनूपा।।
वन्दउं शिवा सहित शिव चरना। कुल समेत गणपति गजवदना।।
सफल मनोरथ करहु हमारे। टारि लोक बाधा भय सारे।।
जब ते शिव विवाह जग जानी। सूखत धान परा जेस पानी।।
बरसा भव सद चित आनन्दा। भयउ मुदित मन सुर मुनि वृन्दा।।
भाग्य निजोरी भाव दुराने। नवयुग किरण आश प्रगटाने।।
शंकर लिंग थापि सब ठांही। जग पूजिय अतिशय हरखाहीं।।
वन्दन नमन धूप अरु दीपा। सब गृह होहिं पोति अरु लीपा।।
साजहि छत्र ध्वजा विधि व्यंजन। करि आवाहन कर्म बिसर्जन।।
शिव विवाह पावन संस्कारा। पूजि जगत फल पाउ अपारा।।

शिव विवाह व्रत रूप धरि, तब ते पसरा लोक।
करि जे ते आनन्द लह, आउ न लग दुख शोक।।6।।
पूजन विधि विस्तार महं, गाइअ वेद पुरान।
शिव समान नहि देव कोउ, स्वयं भाखु भगवान।।7।।
शिव पंचानन दस भुजा, शक्ती संग सुहाइ।
कान्ति तेज सम मणि फटिक, निष्कल रूप कहाइ।।8।।

शिव महिमा लिंग मूरति मांही। सम दोऊ कछु अन्तर नाही।।
निर्मल प्रज्ञा चक्षु विधाता। लिंग ज्योति समता पितु माता।।
जयति शिवा शिव जग सर्वेश्वर। अघ दारिद हर तुम अखिलेश्वर।।
कार्तिकेय गणपति जग वन्दन। विध्न विनाशक भव भय भंजन।।
देव सरल दोउ साधु स्वभावा। करि जे भगति विमल मति पावा।।
सत सुख आउ सुधा रस भांती। दरस मुहूर्त रूप दिन राती।।
सहित तनय जननी वृषकेतू। तत्पर लोक हितारथ हेतू।।
प्रथम शंभु मुख दिसि ईशाना। अदभुत निरमल फटिक समाना।।
सो शिव गगन तत्व बल रूपा। दिव्य शक्ति मय परम अनूपा।।
शान्त भाव चित्त तेज अपारा। लै ब्रह्म कला व्यापु संसारा।।
पंच कला मय सृष्टी बीजा। रहत पंच अक्षर बल भीजा।।
तेहि अक्षर जग करत सनेहा। शिव प्रिय ढेर मुक्ति प्रद देहा।।
नमः शिवाय मंत्र शिव मूला। पूर मनोरथ वसुधाकूला।।
अरुण प्रभा मय भानु प्रभाता। सम तत्पुरुष नाम विख्याता।।
शिव मुख पूरब शान्त प्रकारा। प्रथम बीज रह कला सुचारा।।
वायु तत्व मय रूप कलामय। करि सनेह जग पाउ सहज जय।।

मति अनुरूप जासु जसु नेमा। पाउ शक्ति अनुसारेउ प्रेमा।।
जानि अजान अमंगलकारी। पुरवहु मन मनसा हितकारी।।
अंजन आदिक श्याम रंग, घोर बदन शिवरूप।
मुख दक्षिण बल सब कला, नाम अघोर बल भूप।।9।।
शिव दक्षिण मुख पावक रूपा। बल विद्या सब शक्ति अनूपा।।
आठ कलामय मुख छबि छाजे। तामे विश्व बीज गुण राजे।।
पूरक सकल मनोरथ चेता। सोह शंभु बल शक्ति समेता।।
वाम देव शिव मुख दिसि उत्तर। जलज तत्व धर प्रान जगत भर।।
शंकर बीज चतुर्थाकारा। तेरह कला रूप तन धारा।।
कला प्रतिष्ठा वर्धक ज्ञाना। केशर चन्दन प्रिय सम प्राना।।
सद्योजात रूप मुख पश्चिम। धरनी तत्व रूप सृष्टी सम।।
शंख कुन्द शशि धवल समाना। सौम्य स्वरूप महेश प्रधाना।।
शंकर पंच अक्षर त्रय बीजा। आठ कला सृष्टी गुण सीजा।।
अघ दुख दारिद भव भय हारी। सहित शिवा सो छबि त्रिपुरारी।।
सहित शिवा शिव हृदय बिराजा। छबि पंचानन कुल जन साजा।।
करु कल्यान कवच बनि मोरा। वन्दउं कतहुं बसहुं कोउ छोरा।।
नारी नारी नयन निहारी। तेज ओज भरु सुर अनुहारी।।
युगल रूप छबि होइ सनेहा। मिलु विज्ञान भगति बसि गेहा।।
जीवन जन्म भाव भगताई। नाहि बिछोहिल होइ गोसांई।।
सकै नाहि मिलि एतिक जोहू। ताहि मिलब कछु दुर्लभ होहू।।
दुख दारिद्र अचिन्त्य कुचिन्तन। व्यापइ नाहि सुनहु बल प्रमथन।।
करि विषपान लोक भय घालेउ। तुम समान को जग प्रति पालेउ।।
मंगल रूप अमंगल हारी। विश्व बीज करु वंश सुखारी।।
बनि भय भीत भजहुं खल बन के। पुरवहु नाथ मनोरथ मन के।।

अष्टमूर्ति शंकर कला, शक्ती तेहि अनुकूल।
बरसहिं दोऊ कै कृपा, करैं नाश अघ मूल।।10।।
विद्येश्वर शिव अष्ट तन, शक्ति रूप तेस आठ।
ता महिमा अबरन अतुल, सुर नर मुनि करु पाठ।।11।।
श्वेत भवन कैलास पुर, करहीं शंभु निवास।
भीमकाय वृषभ वदन, ते संग गर्जन रास।।12।।

शेष समान पूंछ आकारा। सींग पैर मुख बरुण प्रकारा।।
उन्नताग्र नयनन रंग लाला। लोक लोग प्रिय अनुपम चाला।।
उत्तम लक्षन दीप्त अनूपन। मणिमय छटा विविध आभूषन।।
शिवा दुलार शंभु प्रीताई। देखि मनेउ नंदी मुदिताई।।

बनि नन्दी शिव शक्ती वाहन। करि लेइ पीठि तनो मन पावन।।
चलहिं शिवा शिव वच अनुकूले। भये गौ जाति शक्ति त्रिशूले।।
मांनु उमा तेहि पुत्र समाना। जग पूजइ लघु शिव बल माना।।
शंकर भवन भीतरी द्वारेउ। रह नन्दी भांती रखवारेउ।।
पालहिं धर्म कर्म कर्त्तव्या। भव्य जौन शिव कुल मनतव्या।।
मानहिं शंभु प्राण अनुहारे। यहि मति जानत सुर संसारे।।
सेवक भल शिव ह्रदय पियारू। जग शिव कारज जिम्मेदारू।।
सत्य समान धरम नहि आना। कहत शास्त्र श्रुति शंकर माना।।
शंकर भक्त शूल दुख नाशन। करहिं नन्दि सुर सोइ प्रयासन।।
जय नन्दीश्वर भक्त सुखारी। गौरी वर जीवन व्रत धारी।।
पुरवहु देव कामना मोरी। करि पद नमन दोउ कर जोरी।।

शिव समान तेजसवी, बांह बली सम काल।
जानि शरण रक्षा करहु, नाशहु भव जंजाल।।13।।

जय कद्रू सुत शेष वतारी। विष्णु सेइअ धरा संभारी।।
मधु फल आसव भोग पियारू। मन आराध्य सुआयसु धारू।।
करहु कृपा शरणागत जानी। मानिय दीन शंभु पद ध्यानी।।
शक्ति अखण्ड प्रचण्ड अनूपा। शंभु शकति दुर्गा नव रूपा।।
पार्वती त्रिपदा बल संगा। नमो नाम नव शक्ति प्रसंगा।।
शक्ति शिवायै भव कल्यानी। विनवहुं बार बार वरदानी।।
अघ हारिणि जग मंगल दायिनि। तम अज्ञान कुबुद्धि नशायिनि।।
सती पार्वति मति मन विमला। सदगुण खानिय सर्व मंगला।।
जात नांघि जग भव दुख भरमा। पूजि मातु पद करि सतकरमा।।
मंगलमयी विमल शुचि चरिता। सौरभ अगं विमल शुभ ललिता।।
आदि शक्ति सृष्टी गुन खानी। नमो नमः जगदम्ब भवानी।।
बिनु देवेश्वरि शक्ती माता। समरथ भै नहि जग निर्माता।।
जग जन जीवन करि अघ करनी। तबहूं कृपा आश रखि जननी।।
मिलु शायद मो सम न कपूता। तबहूं मातु करु दया अकूता।।
ममता मातु समान न आना। सो पुरवहिं जो जो मन ठाना।।
अब भै चाह देहु भगताई। भयउ जथा शिव संग सहाई।।

जयति जयति जगदम्बिका, जग तारिणि जग मात।
जन जीवन सुखकारिणि, जगत जीव प्रभात।।14।।
बिघ्न विनाशक गणपते, मुख छबि शुण्डाकार।
देह गगन गुण बरहु दिसि, ढोवत मूसक भार।।15।।

रवि शशि अगिन नयन त्रय जाके। मगन शिवा शिव अस सुत पाके।।

वारिधि रूप ज्ञान शिर सोहा। करहीं तिते मनुज सुर छोहा।।
डारहिं खल वृत्ति काजेउ बाधा। जे पद पूजि जबहिं इन साधा।।
गज तन बल आयसु पितु माता। शक्ती पाउ तिते शुभ दाता।।
मातु पिता पद तीरथ मानी। लह मनसा फल बुधि गुन खानी।।
जय गणपति जय गौरी नन्दन। मंगल मूरति सुर मुनि वन्दन।।
जे शिव दास विनय सुनि आके। करहिं विमल मति सतपथ लाके।।
परम पुनीत दया अगारा। बसि ह्रदय अवगुण मति जारा।।
धूप दीप वन्दन कर जोरे। पुरवहु देव मनोरथ मोरे।।
षट मुख रूप शिवा शिव चन्दा। शक्ति बज्रधर सुर स्कन्दा।।
रूप कुमार कमल सम नयना। वदन कान्ति प्रज्वलित सुबरना।।
डरे मेरु गिरि पौरुष जेकरे। इन्द्रादिक तारक खल पछरे।।
पुरवहु ह्रदय भाव हमारे। बनि पालक पोषक रखवारे।।
त्रिभुवन वन्दित सृष्टि प्रदाता। वरदायिनी जेष्ठा माता।।
ब्रह्म वचन पूरक सब ढंगा। पुरवहु मातु कथा प्रसंगा।।
परहीं अमर कथा जेहि श्रवने। तेहि भव शोक सताउ न सपने।।
शिवा भौंह शक्ती अवतारी। सती कौशिकी उमा कुमारी।।
रुद्र वल्लभा रुद्र पियारू। शिव स्वरूप करु मति निरमारू।।
पाटलिवती भद्रिका वर्णा। देवि रुद्रानी सहित अपर्णा।।
भाव पुनीते श्रद्धा समेते। भगति तुम्हारि शिवा शिव हेते।।
बार बार तुम्हरे पद लागी। मनसा पुरवहु जानि नुरागी।।
शिव गण स्वामी चण्ड स्वरूपा। श्रेष्ठ रूप शंकर अनुरूपा।।
कुमति दुराइ सुमति संचारा। फल अभीष्ट दै बनि रखवारा।।
मन वर दायक दुर्मुख घालक। पिंगल वरण शंभु गण पालक।।

करन्ह ठांढ़ सेवकाइ शिव, भृंगीश्वर गण देव।
आयसु पालन्ह स्वामि कै, मानत जीवन सेव।।16।।

बीर भद्र बल सम त्रिपुरारी। आयसु पालक अति बलकारी।।
शिव अनुचर तेजस्व सुढंगा। नाशक दक्ष यज्ञ भव दंगा।।
भद्र कलिका चल शिव इच्छा। बनि अगुवा गण करहिं सुरक्षा।।
जेहि विधि बनै शिवाशिव हीता। सोई करउं जबलुं रह जीता।।

शिव सम तेजस्व रुद्रगण, पराक्रमी बलवान।
अभय निर्द्वन्दी प्रमथ गण, बल न होत अनुमान।।17।।

उपमा रहित परम प्रख्याता। महाबली त्रयपुर भय लाता।।
समरथ लोक सृष्टि संहारन। पर दायक बल भगत अपारन।।
शिव सम लक्षन सौम्य अघोरा। रूप कुरूप सुरूप अजोरा।।

युगल चरन ते ता सम प्रीती। धरि तन विविध लोक भय जीती।।
दूज देव आश्रित न रहहीं। गौरी वर चिन्तन चित गहहीं।।
शिव मुख सम शारद तन पावा। दिव्य रूप वसुधा गुण गावा।।
प्रज्ञा सिन्धु लोक हितकारी। मलीनता मन भव भय हारी।।
वक्ष बिराजै कृपा निकेता। सुर विष्णू लक्ष्मी समेता।।
एक दूज बल दोउ प्रभुताई। सकु जग महिमा मापि न गाई।।
ब्रह्मा विष्णु महेश देव त्रय। सुर नर मुनि गावत नित जय जय।।
को नहि अस शिव आयसु पाले। काह न कोउ दुख शंकर घाले।।
शकति शिवा जगती सुख मूला। पूर मनोरथ नाशक शूला।।
उपजहिं लोक असुर भय जेते। बनु बल शक्ति निपातन तेते।।
निद्रा योग प्रबल भव माया। तामे त्रिपदा शक्ति समाया।।
शक्ति यूथ शंकर प्रीताई। बनै तासु बल विश्व सहाई।।
तनया रुद्र जेतिक अवतारी। शंभु आवरण जग हितकारी।।

शिव स्वरूप रवि देवता, दीप्त मण्डलाकार।
एक मात्र निर्गुण सगुण, निराकार साकार।।18।।

अस दिनेश बल शक्ति महेशा। पाइ देहिं जग प्राण हमेशा।।
जेहि मण्डल सब लोक समाये। जीवन ज्योति सृष्टि सब पाये।।
जगत ज्योति महिमा प्रभुताई। रूप सुधा शुचिता अमराई।।
आदि देव रवि भानु दिवाकर। शक्ति शक्ति लह शंभु प्रभाकर।।
सविता गायत्री दोउ वन्दन। इत जग साधि पाउ अभिनन्दन।।
पूर मनोरथ मंगल कारी। कृपा दृष्टि जेहि भानु निहारी।।
बारह शक्ति दिवाकर बारा। गण सत सात अश्व सिंगारा।।
ऋषि गनधर्व देवता नागा। यक्षासुर अप्सरा विभागा।।
सकल ग्रह आदिक रवि साथे। शिव पद पूजिय नावहि माथे।।
सबै शिवा शिव आयसु माना। बनि मंगल परसहिं सद ज्ञाना।।
आठ कला शिव आठ स्वरूपा। देहीं शक्ति मांग अनुरूपा।।
शंकर मूरति रूप विधाता। भूपति चौंसठ गुण सब दाता।।
करुमति सृष्टी सदगुन धारी। सुख सम्पन्न लोक शुभ कारी।।
सकल सृष्टि सृजक संहारी। बनिय न दूसर भार संभारी।।
शंकर चौथ आवरण मांही। शक्ति सकुल वन्दित जग ठांही।।
शिव प्रिय सो जेहि शिव पद भावा। करि जग हित निज दोष दुरावा।।
करि विधना जेस शिव सेवकाई। उपजत मन तेस चलु अपनाई।।
पुरवहु नाथ मोर इहि चाहा। पद लागउं त्यागउं अनराहा।।
सनक सनन्दन सनत्कुमारा। भांती चाह सनातन प्यारा।।

हिरण्यगर्भ विधना तनय, काल पुरुष लोकेश।
बनि विराट कृपा करहु, जयति शंभु अखिलेश।।19।।

सफल धरम संकल्प सअंगा। प्रजापति ग्यारह तिय संगा।।
एतिक सुर शिव भगति परायन। पाउ मोक्ष मन जासु समायन।।
चारि वेद इतिहास पुराना। ग्रंथ शास्त्र वैदिक गुण ज्ञाना।।
करहिं न एक दूज मति ध्वंसा। बरु करि शंभु स्वरूप प्रशंसा।।
मंगल देहिं दुराइअ घटना। मानिय आप ज्योति शिव वचना।।
पावक मण्डल परम अधीश्वर। रुद्र रूप शंकर जगदीश्वर।।
सबल सकल सदमति शुभ अर्था। शंभु तत्व सम्पन्न समरथा।।
निर्गुण रूप धरिय गुन तीना। परम विरागी सृष्टी कीना।।
पालक आप आप संहारन। रहा न यह गुन बल साधारन।।
आपु पिता बनि पूत समानेउ। दृष्टी दीन्ह लोक निरमानेउ।।

भांति पिता विधना विष्णु, आपु मानि सम पूत।
करत नियंत्रण सृष्टि के, बनि योगी अवधूत।।20।।

अधिपति रुद्र लोक परलोका। जेहि महिमा ब्रह्माण्ड विलोका।।
सो स्वभाव शंकर प्रिय लागे। जेहि उर रुद्र भगति बल जागे।।
शंभु चरन गनु रुद्र अमिरता। गावहिं मुदित शिवा शिव चरिता।।
शिव आयसु साधहिं सब खानी। आपन धर्म कर्म सब मानी।।
शंकर मूरति श्रुति अनुसारा। भव भय हर मृड चार प्रकारा।।
आठ विद्येश्वर तन शिव ढंगा। विधना हृदय आदि षट अंगा।।
इत सब करहिं शंभु सेवकाई। बढ़ै विधा जेहि हर प्रीताई।।
शिव सेवी जित भाखु पुराना। बड़ मंगल सब शुभ कल्याना।।
सर्व श्रेष्ठ सर्वोच्च स्वरूपा। शिव कृत जगपति विष्णु रूपा।।
निर्विकार तन अवगुन हीना। रांचि लोक त्रय सृष्टी कीना।।
सगुण रूप जल तत्वाधिकारी। दिव्य सतोगुण पालन कारी।।

शिव विरंचेउ विष्णु वदन, विष्णु रचेउ संसार।
पुनि सो व्यापि ब्रह्माण्ड मंह, बनि जग पालन हार।।21।।

दोउ जगपति दोउ असुर निकन्दन। कलिमल नाशक सुर मुनि वन्दन।।
भव भय हारक भृगु पद धारी। शंख चक्र धर हरि अवतारी।।
मानि श्रेष्ठ करि जग पद सेवा। विष्णू रूप देव त्रय देवा।।
अप्रमेय बल अति मायावी। करहीं सो जो रह स्वेच्छावी।।
सो विष्णु तन शंभु पियारू। हरि पूजन हर कर्म संभारू।।
शिव विष्णु विष्णु शिव रूपा। एक अंश द्वि देह स्वरूपा।।
करहिं विष्णु शंकर पद प्रीता। बल ताते सहजे जग जीता।।

विष्णु रूप परम बिख्याता। नाशक असुर शोक भय त्राता।।
महिमा मय जगती सुखकारी। विष्णु पुनित अवस्था चारी।।
प्रदुम सकर्षणभव अनिरुद्धा। वासदेव लै बनेव प्रसिद्धा।।
केशव कृष्ण विष्णु नारायन। कूर्म वराह मत्स्य वामायन।।
नरसिंह परसु राम बलरामा। वनि हयग्रीव धनुषधर रामा।।
सबै शिवा शिव पद सतकारिअ। मंगल करहिं अमंगल छारिअ।।

लोक देव जित देवि तन, मानव भू नभ ठांव।
सहित ब्रह्म ब्रह्माण्ड सब, जपहिं शिवा शिव नांव।।22।।

करि शिव भगति भगत दुख टालै। को न शिवा शिव आयसु पालैं।।
इन्द्र अगिन यम वरुण कुबेरा। निर्भृति वायु सोम बहु तेरा।।
करि शिव अर्चन सदमति संगा। नावहिं माथ प्रीति बहु ढंगा।।
वज्र त्रिशूल परसु खंग बाना। अकुंश पाश पिनाक महाना।।
अस्त्र शस्त्र दुहुं लोके जेतेउ। गनहिं शिवा शिव स्वामी हेतेउ।।
तंत्र मंत्र यंतर जग जितने। बिनु शिव शक्ति सबल नहि सपने।।
कवच स्वरूप बनै इहि तांही। शिव पद पूजि जियंइ जग मांही।।
देव रूप शिव वृषभ रूपा। सुरभी सुत अति बली अनूपा।।
घिरित पांच गोमाता तन ते। होड़ लगावत बड़वानल ते।।
करिय घोर तप बड़ वर पावा। इतेउ शिवा शिव सुरथ बनावा।।
भै नन्दी सुर शंभु समाना। लै आयसु पालन नुष्ठाना।।
नन्द सुनन्दा सुरभि सुशीला। सुमना संग गोमात पंचीला।।
भगति परायण सम न कोई। शिव चित देहिं पूजि पद वोई।।
रहहिं शंभु गो लोक निवासी। मानिय मातु नाहि सम दासी।।
क्षेत्रपाल लह तेज महाना। वदन कान्ति घन नील समाना।।
मुख छबि दाढ़ ढंग विकराला। फड़केउ ओंठ बनइ रंग लाला।।
शीश केश रंग लाल नोकीला। भृकुटी टेढ़ि अक्ष तेजीला।।
तीन नयन रंग लाल गोलाऊ। भूषन शशि भुजंग अपनाऊ।।
हाथ त्रिशूल पाश संग खंगा। राखहिं शंभु भांति तन नंगा।।
क्षेत्रपाल सुर बसि चहुंवारी। प्रति पल शंभु शकति चितधारी।।
भैरव सिद्धी नखत योगिनी। सकल शिवाश्रित भक्ति साधिनी।।
बसहीं लोक ग्रह जग जेते। शिव पद पूजि आप बल चेते।।
सबै शिवा शिव आयसु मानी। मंगल करहिं मानि शुभ ज्ञानी।।
शंकर प्रथम आवरण मांही। जिन सुर चारिउ पूजित पांही।।
विनवहुं मोर बनहु कुल रक्षक। शक्तिमान दारिद दुख भक्षक।।
नाम जासु जापत भय भागे। टुटइ न ताते कबौं नुरागे।।

भैरव आदिक गण जेते, रहत शम्भु लग ठाढ़।
करहु अनुग्रह मोहि पर, मांगत कांजे गाढ़।।23।।

नारदादि देवर्षि मुनीश्वर। तुम विरचत त्रयपुर अवनीश्वर।।
भगती प्रेम तीन सुर लीना। करन्ह लोक हित चिन्तन कीना।।
जानि दास शिव होउ सहायक। ब्रह्म तनय वसुधा मुनि नायक।।
सुर सम जोउ गन्धर्व पिशाचा। सिद्ध विद्या धर नभचर सांचा।।
नाग गरुड़ खल खग शुचि वर्गा। दल पाताली असुर सवर्गा।।
कूष्माण्ड ग्रह भूत परेता। डाकिनि शकिनि वंश समेता।।
वन उपवन सरिता गृह नारा। दीप सिन्धु तीरथ गिरि ठारा।।
बाग बगीचा मन्दिर भवना। पशु पंक्षी जीवन कृमि कोउना।।
शंभु आवरण संग ब्रह्माण्डा। सकल भुवन जग जिव लघु अण्डा।।
दिवस मास तिथि दिशा दिशायें। वर्ण मंत्र पद छन्द गाथायें।।
अधिपति रूप रुद्र शिव नेरे। सकल शक्ति ब्रह्माण्ड घनेरे।।
देखेउ जौन आउ न ध्याना। आउ नेर शिव अस अनुमाना।।
सब उर सोह परम भगताई। छबि शिव शिवा विलोकन तांई।।
वेद शास्त्र बल सकल पुराना। आइअ शिव पुर गहि स्थाना।।
करहिं शिवा शिव सन बड़ प्रीता। मानि लोक हित जीवन मीता।।
शिष्य सहित गुरु जन गुरु कुल के। धावहिं चरन छुअन दिल हुलके।।
जे शिव शिवा चरन रज पूजा। भाग्यवन्त गनु सम नहि दूजा।।
युगल शब्द स्वर परु जेहि श्रवना। रहन्ह कुशल ते बनु मन मगना।।
रवि शशि शिष्ट विशिष्ट नारि नर। हिम आवहि ऋषि सन्त देव वर।।
साष्टांग सबु करहिं प्रनामा। दइ निज पता कुलज पितु नामा।।
ऊँ नमः शिव सहित शिवाया। पुलकित हृदय प्रेम भरि काया।।
नाथ नमामि नमामि अनामय। पुरवहु मनसा रूप दयामय।।

शिव पूजा जप तप महा, व्रत विधि अगम अपार।
शिव रात्री महिमा अतुल, परसइ शिव संस्कार।।24।।
जीवन गृही महेश कै, अवलोकिय सुर देश।
सुर संस्कृति पुष्पित बनिय, देखि शिवा शिव वेश।।25।।

जयति त्र्यम्बक सुर हितकारी। महिमा अपरम्पार तुम्हारी।।
जे ध्यावै ते मनफल पावै। पाप पतन दुख दोष दुरावै।।
तपसी ऋषि मुनि भगतन संगा। प्रभुहि विकाइ जाइ हर ढंगा।।
देव भूमि ऋषियन प्रभुताई। ब्रह्म प्रकृति कराइ सगाई।।
अघ नर नारि महिम उदगारा। हेतू मनुज वंश संसारा।।
मानि गृही शिव गृही समाना। अतिथि व्यवस्था करि निज थाना।।

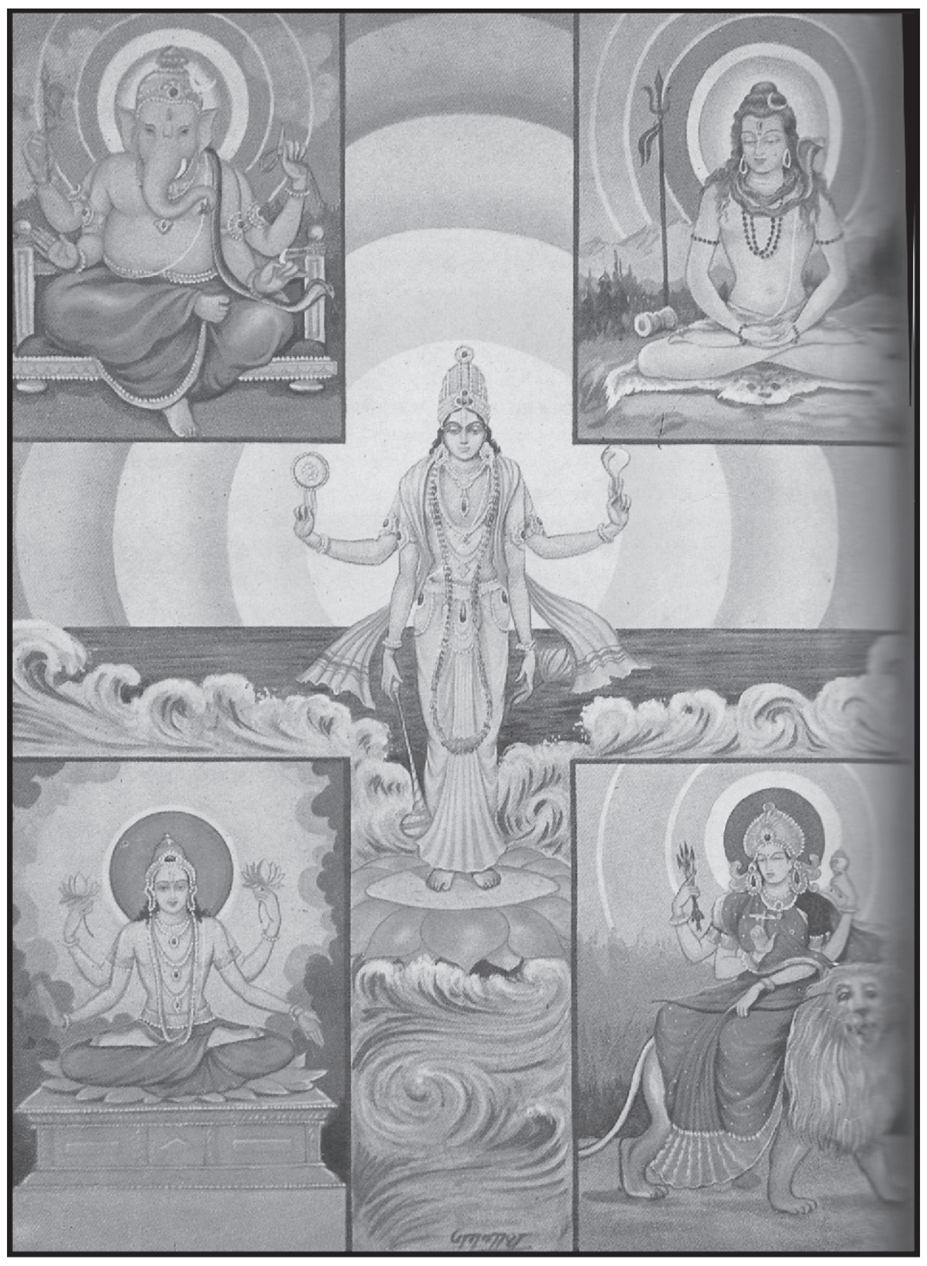

गृहस्थ पंचदेव

भोजन भजन ठांव विश्रामा। दीन्ह महेश भांति गृह धामा।।
गृहिणी भांति उमा महतारी। सेवा करिय पहुंचि सब ठारी।।
धन्य धन्य सुर मुनि मुख गाये। कर जोरे मुख स्तुति लाये।।
प्रति पालक ब्रह्मवीर्य बल, लोक शुभद सुख खानि।
करु मंगल इक देह धरि, जारि लोक भय हानि।।26।।
अधनारीश्वर रूप प्रभु, सर्वानन्दा धार।
निर्विकार माया रहित, नमस्कार शत बार।।27।।

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं, गवेन्द्राधिरूढं गणातीत रूपम्।
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगं, भवानी कलत्रं भजे पंचवक्त्रम्।।1।।
शिवाकान्त शम्भो शशांकार्धमौले, महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप, प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्ण रूप।।2।।
प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ, महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे, त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः।।3।।
चाम्पेयगौरार्धशरीरकायै कर्पूरगौरार्ध शरीरकाय।
धम्मिल्लकायै च जटाधराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।4।।
कस्तूरिकाकुंकुमचर्चितायै चितारजः पुंजविचर्चिताय।
कृतस्मरायै विकृतस्मराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।5।।
चलत्क्वंणत्कंकणनूपुरायै पादाब्जराजत्फणिनूपुराय।
हेमांगदायै भुजगांगदाय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।6।।
विशाल नीलोत्पललोचनायै विकासिपंकरुह लोचनाय।
समेक्षणायै विषमेक्षणाय नमः शिवायै च नमः श्विाय।।7।।
मन्दारमालाकलितालकायै कपालमालांकित कन्धराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।8।।
अम्भोधरश्यामलकुन्तलायै तडित्प्रभाताम्रजटाधराय।
निरीश्वरायै निखिलेश्वराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।9।।
प्रपंचसृष्टुपुन्मुखलास्यकायै समस्तसंहारकताण्डवाय।
जगज्जनन्यैजगदेकपित्रे नमः शिवायै च नमः शिवाय।।10।।
प्रदीप्तरत्नोज्ज्वल कुण्डलायै स्फुरन्महापन्नगभूषणाय।
शिवान्वितायै च शिवान्विताय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।10।।

जयति उमापति गौरिपति, जगदीश्वर सर्वेश।
सुनि स्तुति आशीष देइ, भजे न व्यापु कलेश।।28।।
लय उत्पत्ति स्थिति सकल, बनि रांचक संहार।
तीन नयन धरि विश्वपति, बनहु गंग रस धार।।29।।
व्याह पर्व सम्पन्न करि, लोकाचार नुसार।
कीन्ह बिदाई देव मुनि, करि शंकर सतकार।।30।।
जहं ते आउ जे तहं गयउ, दिन बनु व्याह परन्त।
गयउ ठहरि ऋषि गाढ़ जन, विधि विष्णु हिम सन्त।।31।।
गीत गान मंगल भवन, शंभु गृहे अनुसार।
होन लाग विधिवत सकल, प्रमुख गण परिवार।।32।।
नारदादि सुर भूमि सुर, अत्रि आदि मुनि वृन्द।
गिरि कैलाश निवास करि, चिन्तन लाइ अगिन्द।।33।।
शिव विवाह उद्देश्य का, बनु फल केस सम्पन्न।
चलिय परस्पर बात इहि, बुझि सब भयो प्रसन्न।।34।।

ऋषि मुनि देव उमा पति संगा। रचिय सभा हित लोक प्रसंगा।।
रहिअ सुनति जेस सती भवानी। अमर कथा अपनी जिन्दगानी।।
तानुसार पुनि सभा संजोई। ऋषि मुनि देव पाइ शिव गोई।।
भले रहे शिव पुरुष पुरातन। पर करि व्याह भये नव गातन।।
भा अब देव सीख अनिवारा। जेस पन दम्पति लह संसारा।।
इहि चिन्ता चिन्तन ऋषि कीन्ही। कारण सभा उमापति चीन्ही।।
बैठे आपु शिवा लै साथा। दै अधिकार देव ऋषि माथा।।
सोह जहां शिव शंभु भवानी। ता महिमा कहं जाइ बखानी।।
पुर कैलाश सोह त्रिपुरारी। सोन सुहाग मिला सुखकारी।।
भगतन चाह भगत रखवारू। पुरवहि आपु न राखु उधारू।।
परिणय संस्कार सनसारे। प्रथम महेश आपु निरमारे।।
सिखवन दम्पति धर्म जगत का। हेतु चलन परिवार भगत का।।
अघनारीश्वर महिमा लाई। आपु साधि जग दीन्ह दिखाई।।
जे मोहि मांनु सृष्टि टकसाला। मोहि नुसार आपु मन पाला।।
मो सम मिलै ताहि सन्ताना। करहिं कथन इहि शास्त्र पुराना।।
उपजहि प्राण दिव्य प्रवाहा। पूजनीय बनि रहु चौ पाहा।।
संस्कार महिमा अदभूता। पाइ बनै सुर जे रहु भूता।।
शंकर मनोनीति बुझि पाछिल। ऋषि विचार करि कह तेस आगिल।।
बना नाहि शंकर ते जोहू। दीन्ह सवाचि उमा चलि सोहू।।
आपु उमा बनि बहू समाना। सुर पली ऋषिका सनमाना।।

उपजेउ देव सभा उत्साहा। कहन्ह कथा हित लोक अगाहा।।
मंगल गान करै सुर शेषा। वेद समेत मयंक दिनेशा।।
रुद्र रूप तन वेश अमंगल। महिमा अद्भुत करु जग मंगल।।
प्रथम सभा करि सो जयकारा। मंत्र जौन शिव करहिं उचारा।।
वन्दन नमन करत सर्वेश्वर। वीणाधर बोले तेहि अवसर।।
वाणी भद्र वेगि शुरुवावा। बुझि बिलम्ब मन आकुल आवा।।
लाग नीक सबका इहि बानी। शिव रुख पाइ शकति अगुवानी।।
अवसर सभा लोक हित हेते। भा अनुसूया ओर संकेते।।
शंभु निहारि सभा अनकूलन। बोली बैन हरन तिय शूलन।।

ध्यान भाव मुद्रा मगन, गौरीपति अखिलेश।
सभा सोह वट छांह मंह, होन लोक उपदेश।।35।।
पति परमेश्वर वन्दि पद, ज्ञान ध्यान शिर नाइ।
कह सो जेहि गहि तीय मन, देवी रूप कहाइ।।36।।

बोली अनसूया कर जोरी। जग नारी महिमा न थोरी।।
नारि ब्रह्म विद्या अवतारी। अति पुनीत श्रद्धा सुकुमारी।।
कामधेनु गृह धेनू रूपा। अन्नपूर्णा शक्ति स्वरूपा।।
रिद्धि सिद्धि सुर नर सुखकारी। जीवन रथ अधूर बिनु नारी।।
नारि उंचाई जथ नीचाई। जांनु गृही स्थिति ता नांई।।
पाउ न ज्ञान यज्ञ प्रबलता। जासु गृहे मिलु तीय निबलता।।
जन जीवन रथ रूप तिया तन। त्रास दिहे खल रूप हिया बन।।
बनि पति जे पति ताहि बिगारै। मरु न आप तो विधना मारे।।
नारि समान न धोबिन आना। धोवइ पति गृह बनिअ जनाना।।
धीरज धर्म सहन शालीना। नर ते बड़ तिय मह गुन तीना।।
नारि समान न सम्पत्ति आना। जिनु अवलोकु तेइ ललचाना।।
स्नेह ममत्व परम करुणाई। रक्त तेल दइ वंश चलाई।।
लोक प्रकृति सुरक्षक सृष्टी। बनइ बलद जाकै जेस दृष्टी।।
धरम धरनि विधि रांचि पठावत। मूढ़ सो जेहि तिय मान न भावत।।

नारि बिना गृह आश्रम, सून भांति शमशान।
नारि शक्ति ब्रह्माण्ड मंह, ब्रह्म शक्ति विज्ञान।।37।।
सृष्टि खानि तन नारि कै, ता संग करि अन्याय।
कुसंस्कारी आपु बनु, कुल मरयाद नशाय।।38।।

गढ़इ कांच घट जइस कुम्हारू। तीय संवारइ तथ परिवारू।।
गृह आश्रम नारी गृह देवी। सुभग सरस सुन्दर कुल सेवी।।
संस्कृति जननी शक्ति प्रदाता। कलाकार जेस लोक विधाता।।

नारि निखारु उघारु न जीवन। अस अनसूय सुनाउ सभी सुन।।
नारि अदोष पुरुष जेस बीजा। तेस कुल होन विधा विधि सीजा।।
नारि सुधार ते भल गनु आपन। सुनि विहंसे मन पुरुष पुरातन।।
तिय प्रयोग शाला नर ज्ञानी। कोमल रूप पुरुष पद मानी।।
कह अनसूय गृही प्रभुताई। त्रिपुर तनय बनु जग गुण गाई।।
नारि शकति श्रुति शास्त्र बखाना। जेहि प्रमाण जग निज मन माना।।
प्रेम पयस्विनी सुधा सुमीता। उमा रमा ब्रह्माणी सीता।।
देहिं चेतना नाशहिं शोका। बनि पूजित लोके पर लोका।।
नारि साधि व्रत नेक अनेका। बस करि लेहिं देव प्रत्येका।।
धर्म हानि नारी अपमाना। भा जहं तहं बनु कलिक ठिकाना।।
धन्य धन्य नारी तन रूपा। परम पवित्र चाह जग भूपा।।

नाम विश्वपति शंभु सुनि, मुसकाने कुछ और।
कह याही ते काल कोउ, गोद बैठि गह कौर।।39।।

ब्रह्मचारिणी ब्रह्मवादिनी। धर्म चारिणी पुरुष स्वामिनी।।
बेटी नारि रूप महतारी। समय नुसार आपु तन धारी।।
पति पितु पक्ष सहारे जीवन। बेल सदृश करहिं कुल सीवन।।
जो नहि जांनु नारि प्रभुताई। तासु नाहि जग कतहुं बड़ाई।।
बिना एक दुज रहत अधूरे। अध निन्दा कारक नर घूरे।।
नाना रूप ढंग जग जाना। नाना नाम पदक तन साना।।
नारि बिना जग सून बिलूना। निन्दक आपु मानहीं कूना।।
पति पत्नी दुइ तन इक संगा। इक जीवन दम्पति प्रसंगा।।
भिन्न जनम मरहीं इक साथे। परि परिणय संस्कारहुं हाथे।।
नारि समर्पण को जग तूले। बड़ अघ मांनु देहि जे शूले।।
नारि तीर्थ नाशइ अघ सारा। जेहि नाशन सब तीरथ हारा।।
गो गंगा मानहिं निज नांई। पति व्रत जहां फिरइ उतिराई।।
रवि शशि रोक देहिं रथ आपन। व्यापु न पतिव्रत पर कोउ शापन।।

गृह आश्रम अवसर गहेउ, आज शिवा शिव साथ।
पति व्रत महिमा करन कथ, उपजा प्रेरण माथ।।40।।
पतिव्रत सम पत्नी व्रत, जहं दोउ इक संग।
देव बसै प्रति अंग महं, नेर धार बहु गंग।।41।

पतिव्रत धारि साध्वी देवी। अनसूया जीवन पति सेवी।।
वचन विनीत सभा सन लाई। बहु विधि कथिय नारि प्रभुताई।।
बोली वचन सासु अनुहारी। भाव विनय छवि युगल बिहारी।।
सुनु सर्वग्य सकल उर वासी। बुधि बल तेज धर्म गुन रासी।।

सत्य सिन्धु पालक श्रुति सेतू। ब्याह करिय जग मंगल हेतू।।
बाढ़ु भांति जेहि सुर परिवारा। करन्ह अमंगल अवगुण छारा।।
सदा सर्व गत सबहित तांई। कीन्हेव तुम विष संग सगाई।।
करि परिणय सुर शोक निवारन। देन आगु कुल पथ संस्कारन।।
सभा नीति गृह धर्म समेता। समय कहत अस कृपानिकेता।।
सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी। नाथ कृपा करि मति नर नारी।।
तुम समान दम्पति नहि आना। तुम जग हेतु सभा सब ठाना।।
तुम ते सीख लेन जग स्वामी। आपन करन्ह दूरि मति खामी।।
पुरवहु नाथ मनोरथ सबके। लोक चाह दम्पति पथ धइके।।
जग दम्पति महिमा प्रभुताई। सबहि निहारत तुम चित लाई।।
गृह प्रवेश गृहिणी अनुसारे। स्वामिय आरति उमा उतारें।।

करि आरति अखिलेश कै, उमा सहित सुर सन्त।
कथन राम सिय आचरण, कहि अनसूय तुरन्त।।42।।

उमा आरती प्रेम नुरागा। निज अनुरूप नाथ वर मांगा।।
सुर मुनि विष्णु विरंचि समेता। चाह नुकूलन कृपानिकेता।।
सुरन्ह चाह बूझिय सब खानी। ऐसेन होइ महेश बखानी।।
अज अनवद्य अकाय अभोगी। बनु शिव वैद्य जथा जग रोगी।।
कह अनसूय जौन जग लीका। दम्पति धरम आचरन नीका।।
कत विधि रचिय नारि तन विधना। बनि अधीन होहीं सुख सपना।।
विधि स्वरूप मां पितु परिवारू। मिलि वर देहिं सहित संसकारू।।
हित दम्पति जीवन हर शोका। जन्म मरण लोका परलोका।।
आदि शक्ति प्रभुता उपराजी। बनि पति सेवी तिय सुखराजी।।
सकल परम गति कै अधिकारी। पति पद सेइ बनै प्रति नारी।।
उर धरि धीर सहैं पर त्रासा। जहं दुरगति तहं व्यापु निराशा।।
एक नारि व्रत जौ नर रहहीं। सो नर रूप देव अनुसरहीं।।
सोई धरम शील गुनवन्ता। सकहीं पालि तीय सम सन्ता।।
उपजु तासु कुल देव समाना। जेस महिमा सुर शास्त्र बखाना।।
जननी सम जानहिं पर नारी। पर धन मानिय विष अनुहारी।।
जहं दम्पति इहि भाव स्वभाऊ। सो तपसी मो सम जग ठाऊ।।
जे दम्पति पर धन पर दारा। लोभ करिअ राखिय अनचारा।।
पावइ कुगति कुलज असुराई। सह दुख नारकीय करुणाई।।
साधक दम्पति धर्म विधाना। नाहिय शिव समान जग आना।।
जहं नर नारि बसै इहि ढंगा। बहइ तहां सुरता हर गंगा।।
गृह आश्रम धर्म मर्यादा। सम सुख नाहि आन अनुवादा।।

गृह जीवन दम्पति सदचारे। मिले स्वर्ग सुत देव नुहारे।।
दम्पति सम्पति भव दुख नाशी। नाम भले गृह आश्रम बासी।।
सेवा कुल निर्माण निवारन। गृह आश्रम जल जीवन तारन।।
दम्पति जीवन दुइ कुल शोधक। सहित भावि कुल आत्म प्रबोधक।।
जौ दम्पति जीवन सदचारी। सुरन्ह हेतु वर बनत अगारी।।
सृष्टी धुरी सजीवन मूला। दम्पति यज्ञ नाशु भव शूला।।
राम सीय आदर्श महाना। कह अन्सू जेस तुलसि बखाना।।

इते वृद्ध दसरथ नृपति, यज्ञाचार सजाइ।
गृह आश्रम पालिय सविधि, कुल परिवार चलाइ।।43।।
कौशल्यादि नारि प्रिय, सब आचरन पुनीत।
पति अनुकूले प्रेम दृढ़, हरि पद कमल विनीत।।44।।

गुरु गृह गयउ आपु महिपाला। चरन लागि करि विनय विशाला।।
निज दुख सुख सब गुरुहि सुनायउ। कहि वशिष्ठ बहु विधि समुझायउ।।
श्रृंगी ऋषिहि वशिष्ठ बोलावा। पुत्र काम शुभ यज्ञ करावा।।
प्रगटेउ जहं रघुपति शशि चारू। विश्व सुखद खल कमल तुषारू।।
अवध पुरी रघुकुल मनि राऊं। वेद विदित तेहि दसरथ नाऊं।।
धरम धुरन्धर गुन निधि ज्ञानी। ह्रदय भगति मति सांरग पानी।।
राम सीय परिवार अनूपा। जीवन जन्म लोक सुख भूपा।।
गुरु आयसु लै कीन्ह विवाहा। ता गुन गाइ चरित जग गाहा।।
गृह आश्रम पूर्व तप धारा। आप आन हन खल आचारा।।
तिन निहारि हरखहिं सुर देवा। सुनहीं मुदित कथा महादेवा।।
सो दम्पति आचार विचारा। सुनु मर्याद शील व्यवहारा।।
वधू लरिकिनी पर घर आई। राखेउ नयन पलक की नांई।।
नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई। राखेउ प्रान जानकिहि नांई।।
सुन्दर वधुन्ह सासु लै सोई। फनिकन्ह जनु सिर मनि उर गोई।।
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी। सास ससुर परिजनहि पियारी।।
कलप बोलि जिमि बहु विधि पाली। सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली।।
जियन मूरि जिमि जोगवत रहउं। दीप बाति नहि टारन कहऊं।।

गिरा अरथ जल बीचि सम, कहियत भिन्न न भिन्न।
राम सीय युग जोड़ लखि, होत दूरि जग खिन्न।।45।।

जनक सुता जग जननि जानकी। अतिशय प्रिय करुनानिधान की।।
जानि प्रिया अति आदर कीन्हा। रघुपति मानि अंग अघ लीन्हा।।
कहि प्रिय वचन प्रिया समुझाई। लगे मातु पद आशिष पाई।।
कहेउ कृपालु भानुकुल माथा। परिहरि सोचु चलहु वन साथा।।

सासु नेह नहि जाइ बखाना। ताहि भगत अस करिय बखाना।।
चन्द किरन रस रसिक चकोरी। रबि रुख नयन सकै किमि जोरी।।
सुरसरि सुभग वनज वन चारी। डाबर जोर कि हंस कुमारी।।
तब नृप सीय लाय उर लीन्ही। अति हित बहुत भांति सिख दीन्ही।।
एहि विधि करेउ उपाय कदम्बा। फिरइ त होइ प्रान अवलम्बा।।
प्रान तजत पूंछा नृप एही। राम लखन कहं वधू विदेही।।
वधू जानकी कुल दुख जानी। ढुरत आंसु मुख आउ न बानी।।
नयने नीर सासु पद लागी। सुनिअ मातु मैं परम अभागी।।
सेवा समय दैव बनु दीन्हा। मोर मनोरथ सफल न कीन्हा।।
तजब क्षोभु जनि छाड़िअ छोहूं। करम कठिन कछु दोष न मोहूं।।

सासु ससुर सन मोर हुति, विनय करिब परि पांय।
मोर सोचु जनि करिय कछु, मैं वन सुखी सुभाय।।46।।

आपु अंग अध मानि जानकी। मति मानिय कृपानिधान की।।
कह स्वामी अनुकूले सीता। शोभा खानि सुशील विनीता।।
जानहिं कृपा सिन्धु प्रभुताई। सेवति चरन कमल मन लाई।।
यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी। विपुल सदा सेवा विधि गुनी।।
निज कर गृह परिचरजा करई। राम चन्द्र आयसु अनुसरई।।
कह सुकुमारि नाथ वन जोगू। तुम्हें उचित तप मोकहं भोगू।।
चाह नाहि मन स्वामि वियोगा। बिनु पति दूभर सकल सुयोगा।।
बन दुख तोर देखि सुकुमारी। असह्य होइ सो प्रथम विचारी।।
सुनि पति वचन कहत वैदेही।। सुनहु प्रानपति परम सनेही।।
प्रभु करुनामय परम विवेकी। तनु तजि रहति छांह किमि छेंकी।।
प्रभा जाइ कहं भानु बिहाई। कहं चन्द्रिका चन्द्र तजि जाई।।
पुनि पुनि समुझि दीख मन मांही। पिय वियोग सम दुख जग नाही।।

प्राननाथ करुनायतन, सुन्दर सुखद सुजान।
तुम बिनु रघुकुल कुमुद विधि, सुर पुर नरक समान।।47।।
खग मृग परिजन नगर बनु, बलकल विमल दुकूल।
नाथ साथ सुर सदन सम, परन साल सुखमूल।।48।।

प्रान नाथ तुम बिनु जग मांही। मोकहं सुखद कतहुं कोउ नाही।।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे। सरद विमल विधु वदन निहारे।।
कुश किसलय साथरी सुहाई। प्रभु संग मंजु मनोज तुराई।।
कन्दमूल फल अमिअ अहारू। अवध सौंध सत सरिस पहारू।।
मोहि मग चलत न होइहि हारी। छिनु छिनु चरन सरोज निहारी।।
सबहि भांति पिय सेवा करि हौं। मारग जनित सकल श्रम हरिहौं।।

पग कंटक निहारि रघुनाथा। करब साफ आगे चलि साथा।।
जहं जहं बने दीखु दुख भारी। बांटब नाथ बांटु जेस नारी।।
सीय कथन अनुसार निबाहा। केवट देन प्रभु जब चाहा।।
पिय हिम की सिय जाननिहारी। मनि मुंदरी मन मुदित उतारी।।
कहेउ कृपालु लेहि उतिराई। केवट चरन गहे अकुलाई।।
सिय मन राम चरन अनुरागा। अवध सहस समवन प्रिय लागा।।
परन कुटी प्रिय प्रियतम संगा। प्रिय परिवारु कुरंग विहंगा।।
राम संग सिय रहति सुखारी। पुर परिजन गृह सुरति बिसारी।।
पति अनुकूल सदा रह सीता। शोभा खान सुशील विनीता।।
सासु ससुर मुनितिय कह मुनिवर। असन अमिअ सम कन्दमूल फर।।
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एक मन मोरा।।
सो मन सदा रहत तोहि पाही। जानु प्रीति रस एतनेहु माही।।

धर्म कर्म कर्त्तव्य संग, मर्यादित नर नारि।
देव रूप सो लोक रह, वच अनसूय उचारि।।49।।

ऋषि समूह ऋषि पत्नी बानी। सुनत शिवा शिव जीवन मानी।।
जौन लोक हित मनुज सुखारी। सो शिव सुनन्ह चहत लै नारी।।
कथन सोइ अनसूया प्रीता। करिअ विविध विधि भाव विनीता।।
कहि प्रिय वचन प्रिया समुझाई। जौन जानि बुझि कथिय गोसांई।।
पति पतिनी जीवन व्यवहारा। भल जहं तहां व्यापु संस्कारा।।
उत्तम के अस बस मन मांही। सपनेउ आन पुरुष जग नाही।।
मध्यम पर पति देखहि कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे।।
मातु पिता भ्राता हितकारी। मित प्रद सब सुनु शैलकुमारी।।
अधम नारि जो सेव न स्वामी। पति अधमी जो स्वारथ कामी।।
पति वंचक पर पति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई।।
छन सुख लागि जनम सत कोटी। दुख न समुझ ते सम को खोटी।।
पति प्रतिकूल जनम जहं जाई। विधवा होइ पाई तरुनाई।।
बनि शालीन नयन तर राखिय। शील संकोच उचित भल भाखिय।।
सहनशीलता ढंग कुमारी। सो नारी भल लोक पियारी।।
लोग सराहहिं शील स्वभाऊ। कुल दोऊ हरखहिं सुख पाऊ।।
सद आचार सतो आहारा। सन्तति देइ राम अनुहारा।।
पुत्रि पवित्र करै कुल दोऊ। सुजश धवल जग कह सब कोऊ।।
कुल परिवार चलै जहं ऐसे। तहं व्यापइ सुख सतयुग जैसे।।
वरि विनीत धरम व्रत नारी। गुन सागर सत्वृत्ति अनुचारी।।
पति पतिनी गृह देव उपजहीं। धर्म थापि जन जन दुख हरहीं।।

पुत्रवती युवती जग सोई। रह व्रत वती पूजु सब कोई।।
व्रत बंधन हीना नर नारी। होहि न भल वरु होहिं कुचारी।।
लोक कुचारी जीवन ढंगा। पशु अनुरूप श्रृंग पुंछ भंगा।।

नारि जनम जीवन सकल, होइ लोक केहि खानि।
हेतु शिवा उपदेश देइ, सुनिय सभा तेहि मानि।।50।।
लाग उमा मन ढेर प्रिय, अन्तर उठिय तरंग।
सिख नुसार अनसूय के, सोचु चलब पिय संग।।51।।
तीय सीख संसार कै, अनसूया भरु माथ।
सभा समर्थन एक स्वर, संग उठायउ हाथ।।52।।

विश्व वरेश शंभु त्रिपुरारी। जननी गिरिजा शैल कुमारी।।
जग हित हेतु वेष वर धारी। दूल्हनि बनिय जगत महतारी।।
सुनहि सीख सुत बहू समाना। जथा लोक मानव चलि माना।।
होइ जौन त्रिभुवन हितकारी। सोई संकल्प सोई व्रतधारी।।
सोह बैठ गिरिवर शिरनाई। गोई रूप जगत पितु माई।।
मानि ऋषिन्ह पुरखा अनुहारे। जग ऋषिका सासुन्ह प्रकारे।।
अनसूया मति परम अनूपा। सुनिय उमा बनि बहू स्वरूपा।।
दिन दुइ चार सिखावन बाता। अनसूया दीन्ही दिनराता।।
सती वचन केहि न प्रिय लागा। सुनिय शंभु तक करि अनुरागा।।
ऋषि गण सभा परम हरखाई। धन्य बखानि सबै शिरनाई।।
यदपि उमा जग जननि भवानी। परम साध्वी नारि सयानी।।
पर सति सिखवन आवत काने। उपजा परम ज्ञान विज्ञाने।।
हेतू ब्याह शंभु उद्‌देशा। जग हित देन ऋषी उपदेशा।।
दम्पति जीवन कुल परिवारा। जेहि विधि बनइ देव अनुहारा।।
मने मनोरथ सो शिव धारी। सहित सती ऋषि तइस उचारी।।
करि ऋषि परम्परा सम्माना। सुनब छोड़ि भूले शिव ध्याना।।
होइ जिते मानव परिवारू। मोरी नाइ ऋषी आधारू।।
बूझि महेश भाव गिरिजा के। तनय स्वरूप भांति तनुजा के।।
पुनि महेश मुद वचन उचारा। को पुरवहि मन आश हमारा।।
पितृ देव ऋषि लोक हितारथ। पुरवहिं सोई मनसा स्वारथ।।
सब अधिकार सिखावन वोहू। सुनि चलि मोसम भूतल जोहू।।
बनु युग रांचक सो परिवारा। पाउ ब्रह्म बल सुर अनुहारा।।
इहि ते बिछुड़ि असुरता गरसे। लह कलि कलुष शूल दुख बरसे।।
दवा न दूसरि तासु उपाई। भूले मनुज आपु प्रभुताई।।

ऋषि सन्देश उपदेश विधि, गौ सतसंग सुचार।
इहि सम तीरथ दूज नहि, जो हरु भय कलिचार।।53।।

अनसूया सिखवन व्यवहारा। सहित उमा हितकर संसारा।।
ताहि सती कह विनय समेता। उमा सुनाइ लोक तिय हेता।।
तीय सिखावन विविध प्रकारा। गिरिजा तेहि साधन स्वीकारा।।
सती सीख जो परु उम काने। ऋषि मुनि देव सभा भल माने।।
बनि वर वधू रूप दोउ प्रानी। करि विसतृत देव ऋषि बानी।।
लीला लोक हेत हित जैसे। सुनन्ह कहन्ह भावत शिव तैसे।।
पाइ सीख उभरा मन अन्तर। चाहा उमा देन मन मन्तर।।
जौ तुम्हार अनुशासन पाऊं।। तौ कछु मातु आपु मति गाऊं।।
लागत बड़ प्रिय परम सुहावन। आपन बीती आन सुनावन।।
मानव देह लोक दुइ खानी। तिमे ब्रह्म निज शक्ति नुदानी।।
जगत योनि मानव अनुहारा। सम सरेख नहि कोउ संसारा।।
ता गुण वीर्य लोक पितु माता। हरत ताप त्रय भांति विधाता।।
पुत्री पुत्र रूप निरमानी। आदि आज लौं सृष्टि बखानी।।
तामें पुत्र वंश दृढ़ रूपा। तनया जीवन लतिक स्वरूपा।।
अल्प काल पोषित पितु माता। अवलम्बन देहीं पर गाता।।
लेहिं पूत ते निज तन सेवा। राखहिं कछुक परस्पर भेवा।।
भल पति आश्रम पाइअ नारी। होइ वंश कुल सहित सुखारी।।
जौ अवलम्बन होइ बिलूना। तौ सुख जाइ उपजु दुख दूना।।
मातु भवन जीवन लरिकाई। सिखन सुचार सुशिक्षा ताई।।

साधइ जीवन आपु जेस, तेस बनु कूल स्वभाव।
जौ स्वभाव त्यागन परहिं, तौ प्रतिकूल दिखाव।।54।।

घर पितु मातु समय लरिकाई। पालब तीय धरम उचिताई।।
भात बहिन भावज संग प्रीती। सहित सनेह रखन्ह रखु रीती।।
द्वेष ईर्ष्या बैर कुभाऊ।। जिन राखा तिन मान न पाऊ।।
सहनशीलता विनय स्वभावा। पाइ काह नाही मन भावा।।
नैहर नगर मुदित सब काजी। पति गृह सासु ससुर कुल राजी।।
पढ़हि न विद्या अजा चराये। नारि धरम गुण जाइ दुराये।।
सुनहु मातु गृह धर्माचारा। पति पतिनी रथ चक अनुहारा।।
वेद विदित संस्कृति शुचि नारी। गृह लक्ष्मी भल नीक अगारी।।
सोहत नारि बिना गृह नाही। बिनु संस्कृति नहि नारि सुहाहीं।।
नारि बिना नर तनु गनु वैसे। डार पात बिनु तरुवर जैसे।।
सदवृत्त सदाचारि संस्कारी। तीय जहां तहं युग निरमारी।।
नारि शुची नर होइ कुचारी। जांनु तहां विधना दुख डारी।।
रोवहिं आपु हाथ दइ माथा। खोवहिं आपु अजश तिय साथा।।

तासु पतन को सकै निवारी। नारि ताड़ना जेहि घर भारी।।
तीय तीर्थ तन परम पुनीता। होहिं जाहि घर सो सम सीता।।
बनहीं नर जौ राम समाना।। नाशइ दोष धरा अघ नाना।।
मात पिता सम सास ससुर में। कीजे भाव बसिय पति पुर में।।
सेवा विधि मर्याद समेता। नारि धर्म रखु प्रज्ञा निकेता।।
अति आदर करु जेठ जेठानी। बालक सम देखहु देवरानी।।
बहिन भांति ननदी को जानै। शुद्ध भाव सब के संग सानै।।
कुल सेवा समेत पति नाता। दरसावहु जीवन गुण बाता।।

अंग भंग काना बधिर, कूबड़ लंगड़ होइ।
कीजै नहि उपहास कछु, आपन हित भल टोइ।।55।।

प्रिय पति ननद ससुर घर सासू। अनुसारे बनु सकल विकासू।।
गुण स्वभाव जौ चरित अभीना। तेहि घर सुख सम्पति विधि दीना।।
देश काल स्थिति अनुसारे। करम करब श्रम नीति विचारे।।
गनु नुकूल पति गुरु गुण भांती। जीवन हेतु ब्रह्म बल थाती।।
यदपि वधू गमनहि जब ससुरे। आप सचेत रहहिं मन भितरे।।
तेहि दिन कुल जन ताहि निहारे। रहन सहन बोलब आचारे।।
बनु भल जित तित वधू बनावति। बिगरे थोर ढेर भय पावति।।
अवसर बूझि विवेक समेता। लाज धरम मरजाद निकेता।।
जेहि विधि बनइ करइं सो नीका। पाइ भूल सब कहहिं अठीका।।
नहि कोउ करहि सुधार प्रयासा। बरु ऊपर ते दै बड़ त्रासा।।
नाना निन्दा नारि कहानी। अस कोउ नाइ कहन्ह न जानी।।
करि जे आध अंग अपमाना। गनु निज पांव कुल्हाड़ी ताना।।
दम्पति स्थिति आपु न चीन्हे। मांनु विधाता तेहि दुख दीन्हे।।
नहि निहार पति आपु स्वभाऊ। पति व्रत नारि चाह मन लाऊ।।
मानत आपु पुरुष परमेश्वर। बूझि न पाउ तीय सर्वेश्चर।।
भले चलत पति आपु अगाड़ी। होइ हंसी जेहि खोव पछाड़ी।।
पुरुष स्वतंत्र नारि अनुगामी। जहां न इत तहं सर्वस खामी।।
पंथ उचित सम मान धिकारी। चाहे पुरुष होइ चह नारी।।

कुछ अनुशासन नारि पर, राखब पति मरजाद।
नारिन्ह मानब सोउ भल, निश दिन राखब याद।।56।।

पर गृह बास नहान बसन बिन। वर्जित ढेर बचाउ युवा दिन।।
न अति चूप न होहि कुभाषी। अवसर सकल सोह मृदु भाषी।।
ऊट पटांग कहां प्रिय काहू। भितर बहिर अस बोल न चाहू।।
हंसी दिल्लगी ताना बाना। निन्दा मिथ्या मन न साना।।

पति अमान चंचलता छल भय। निर्दयता जड़ता दुर्गुण धय।।
एतिक साधि चलै जे नारी। आपु सुखी करु लोक सुखारी।।
मीसी मेंहदी पान मशाला। इहि ते रंगि न करु रंग काला।।
बिनु सदवृत्ति सोह नहि बाला। नख राखहिं सूपनखा वाला।।
नहि सुहात नथ वेदीं काजल। जौ चोरी चुंगली मा स्वर गल।।
कड़ा छड़ा हंसुली कनफूला। सोहत तिय मरजाद नुकूला।।
रहब जो दूभर रहु पति साथे। सोह न माला टीका माथे।।
सोवइ पाछ जागु घर आगे। ताहि विलोकि विपति सब भागे।।
सेवा स्वारथ नारि आभूषन। गहहिं न सन्तति हेतु कुपूषन।।
बिछुवा पायल बांक सिंगारे। भल तौ जौ तन तपन अगारे।।

रैन दिवस चर्या सहित, शर्म श्रम मन चाह।
आय नुसारे खर्च करु, राखि वचन परवाह।।57।।

सहनशीलता शानित शुचिता। सेवा शील सगुणता नमता।।
लाज क्षमा संयम संतोषा। इत ते जे तिय निज तन पोषा।।
रहहिं जहां झुकि जाइ विधाता। जौ रहु संस्कार भल नाता।।
इहि विपरीत होइ जहं नारी। हीन संस्कृति गनु अनचारी।।
कलह कुवेषी भाव विषादी। वर पछिताइ तिते करि शादी।।
रोगी देह लड़ाकू मुखरा। रूठी चटोरी कुलषित कुठरा।।
बनिय निलाजु सासु शिर मारें। बड़ि खर्चीलि कुफैशन धारें।।
अइस नारि जहं तहं कलि डेरा। दरिद न भगु चहै रोज खदेरा।।
लोक नारि पति व्रत गुन खानी। हतहिं दोष कुल वंश नदानी।।
जौ अंग रंग भल मनहर बानी। देवी रूप तेहि लोक बखानी।।

जीभ न जाके वश रहै, सो नारी मति हीन।
धन लज्जा आरोग्यता, लेइ प्रतिष्ठा छीन।।58।।
रिनी दुखी निज को करै, भये चटोरी कोय।
कपट ईर्ष्या झूंठ डाह ते, तन मन साना होय।।59।।
कागा काको धन हरै, कोयल काको देत।
मीठे वचन सुनाइ के, जग अपनो करि लेत।।60।।
कारज वाही नित करै, लोक समय अनुहार।
कहं हारत को खेल महं, खेलु जो दांव विचार।।61।।
सत्य कर्म के पंथ पर, कंटक रहत अनेक।
दृढ़ता व्यापत तासु उर, जेहि मन सोच विवेक।।62।।

नर नारी जौ दोउ संसकारी। सोइ सकहिं भव स्वर्ग उतारी।।
शैल सुता जग जननि भवानी। विश्व रूप शंकर मन रानी।।

जेहि विधि कथइ नारि हित बानी। सुनि अनसूया बड़ हरखानी।।
बोली मातु बहू सम गिरिजा। बड़ गुनवती सकल गुण सिरिजा।।
परम चतुर सब ढंग सयानी। भले वधू दूल्हन जग जानी।।
पर शिक्षा संस्कार सुबाता। करत सिद्ध लायक जग माता।।
बूझि कुशल सुर नर हितकारी। पुनि अनसूया वचन उचारी।।
सुनहु उमा शंकर मन प्रिया। जौ गुन आउ सकल तन त्रिया।।
बनु तब मातु पदे अनुकूला। जांनु बिगारन पर दुख शूला।।
क्षमता मातु सोह तोहि गाता। वर विवाह मन चाह विधाता।।
मातु शब्द अनुपम अदभूता। संवेदित जीवन्त अकूता।।
पावन परम प्राण प्रतीका। दिव्य शान्ति श्रद्धालु सभी का।।
मां महिमा पद ब्रह्म समाना। सृष्टी मय विधना विज्ञाना।।
मातृ शक्ति गुन बल संस्कारा। जेहि शिशु तन सो कतहुं न हारा।।
कर्म रूप संस्कार विचारा। शिक्षा लौकिक ज्ञान अधारा।।
द्वौ गुण शोभित मातु स्वरूपा। तौ सन्तति बनु सुर अनुरूपा।।
सो जग विजयी सिद्धि प्रदाता। मातृ देव भव जेहि मन नाता।।

मात पिता जग सो बनै, जे दम्पति सुख साध।
दम्पति जीवन देव सम, हीन व्यथा भय ब्याध।।63।।

ब्याह उद्‌देश्य परस्पर प्रीती। देन स्वदेश सुसन्तति नीती।।
करन्ह न आपु पतन लै स्वादा। सिर जन हेतु मनुज मरजादा।।
तनया तनय ज्ञान सुरताई। सहित जनम आपन सफलाई।।
मात पिता गुन अवगुन जोई। सहजे सन्तति गहहीं सोई।।
शिशु जीवन मां पितु आधारे। भले बाल गनु हरि अनुहारे।।
इहि ते शिशु पालन दिन काला। करहिं सुकर्म यज्ञ महिपाला।।
यज्ञादिक सतकर्म सुसंगा। ते बलवीर्य अंग सुर ढंगा।।
बनु ताते सन्तति सदचारी। लोक हितारथ भवन सुखारी।।
मात पिता शिशु बीजाधारा। रूप रंग गुण परसु प्रकारा।।
जे जेहि छाया जेहि आधारे। होन तइस विधना विधि ढारे।।
शिशु निर्माण काल पितु माता। आप रूप सम ब्रह्म विधाता।।
अस गुण ते सन्तति अनुकूला। देहिं न सपन जरा दिन शूला।।
बनु मय संस्कृति कुल परिवारा। राज राष्ट्र भावी आधारा।।
कुल फुलवारी गृह उद्याना। शिखा संस्कृति भल सन्ताना।।
मात पिता माली अनुहारे। देहिं ज्ञान हति खरपतवारे।।
शक्ति उर्वरा विविध थमाई। करि प्रति पलेउ निकाय गुड़ाई।।
शिक्षा संस्कार सतसंगा। बाल विकास करै बहु ढंगा।।

सका न करि जे बाल विकासन। सो जग मूढ़ कमाउ निपातन।।
देव भूमि जहं हिमगिरि धरनी। शिशु निर्माण देव ऋषि वरनी।।
जे हिम तपै विमल मन पावन। मिलै ताहि सनतति मन भावन।।
जाइ न हिम तौ बनु सदचारी। जोउ यम नियम प्रज्ञेश उचारी।।

सन्तति नाहि हजार भल, जहं संयमि दुइचार।
सकै सेइ पितु मातु पद, करै राष्ट्र उजियार।।64।।
भल ते सुख सुर लोक लह, सुर सुत उपजें तासु।
मुक्त करावहि ऋण सकल, देश न पावइ हासु।।65।।

फूट कलह दारिद भय नेता। सकल बिनासहिं पूत सृजेता।।
राज राष्ट्र आंतक निपातइ। नहि विश्वास घात कोउ घातइ।।
सोह सकल सुख भागु कुकाला। जनहि सपूत जौ दम्पति बाला।।
परिष्कार माता पितु गोई। जांनु देव समता नहि कोई।।
गर्भ काल जित स्तन पाना। तब लौं मातु अवसि करु ध्याना।।
जीवन पालु संयमित आपन। पति सहबास न करु कटि गातन।।
पियइ दुषित पय उपजै रोगा। आप घटइ क्षमता शिशु योगा।।
आपु मात पितु गह पतनाई। बाल विरोध सहज बनि जाई।।
वर्जित भोग बचाउ निपातन। शिशु रक्षा भल आत्म उपासन।।
सन्तति संयम परम सनेहू। रक्षा धर्म दोउ कुल देहू।।
तनया तनय जांनु इक भांती। सधु संयम साधे दिन राती।।
बिनु संयम सन्तति जे पाला। बाढु कुमति उपजइ कलिकाला।।
जाइ दुराइ मनुज प्रभुताई। बनु रोगी तन प्रिय असुराई।।
बनु गृह दारा अन बिसवासी। सेवा हीन विवाद विकासी।।
मानव जाति कर्म व्यापारी। लाभ न जनम बिना सदचारी।।
बिन श्रद्धा विश्वास संजोये। फल दूलभ जोऊ जग बोये।।
भगति भावना संग खिलवारा। करि जे ताहि शिवम दुतकारा।।

जन्म जाति जग लिंग ते, चार जाति जेस गोत।
जियन जाति जग कर्म ते, सम करनी सब होत।।66।।
होत दूर नहि जन्म गुण, गोत प्रकार प्रभाव।
कर्म जाति बदलत रहइ, पैतृक सो न कहाव।।67।।

सकल गोत जन कर्म धिकारी। पाइअ जन्म भले नर नारी।।
कर्म सरेख मानि जग जोऊ। अनुसारेउ पद पावत सोऊ।।
गोत गढ़त जग वंश प्रजाती। कर्म रांचु जग अनगिन जाती।।
ज्यों ज्यों बाढ़ु करम व्यापारा। बढ़ु त्यों लोक जाति प्रकारा।।
जाति बाढ़ि बनु लोक विवादा। करै दुखी मन पाउ विषादा।।

गोत जाति पैतृक प्रभूता। परसि जनम भर रहइ सबूता।।
देह जाति नर नारि प्रकारा। परिचय देहि गोत आचारा।।
कर्म नु सारेउ जीवन जाती। राज लोक परिचय तेहि भांती।।
जौन कर्म नहि मानव ताईं। साधे जाति बनइ खल नांई।।
कर्म जाति चिर चारि प्रकारा। ऋषि मुनि देव मनुज निरधारा।।
प्रथम नाम विप्र परनामू। चर्या ब्रह्म सहित ब्रह्म कामू।।
करु वसुधा हित वेद अधीना। हीन इतै तौ द्विज बल हीना।।
मध्य जाति गनु क्षत्रिय कर्मा। ताते राज राष्ट्र हित धर्मा।।
वैश्य कर्म स्तर तीजाई। हेतु व्यवस्था राज निकाई।।
शूद नाम चौथा संसारा। लोक श्रम पथ करत गुजारा।।
वरनउं बार बार त्रिपुरारी। जानि शूद प्रभु देहु उबारी।।
वशे प्रमाद भूल भटकन के। बिछुड़ा फिरत भरा मद मन के।।
आपन भूल भूल नहि मानी। आन भूल सब विधि पहिचानी।।
देहु नाथ प्रज्ञा इहि ढंगा। नहि बिछुड़न बनु भगति प्रसंगा।।
व्रत तीरथ नुष्ठान उपासन। साधन करु मति कुमति निकासन।।
जाति भाव कोऊ जग मांही। नाथ भगति सुख नाहि दुराहीं।।
अब प्रभु भूल करब नहि जानी। बेर क्षमहु इहि विनती मानी।।
ईश्वर अशं जीव अविनाशी। पाइ गोत बल आपु विकासी।।
मानव धर्म कर्म आधारा। बनु सरेख केस ऋषिन्ह उचारा।।
सुनहिं शिवा शिव शिष्य समाना। सीख जौन ऋषि मुनि अनुदाना।।
शायद आन सुनत तेस नाहीं। शंभु सुनिय जेहि भांति एकाहीं।।
सुधा स्रोत सोई जग पावा। साधि आपु परिवार रचावा।।

करहिं आचरित लोक जे, मानि शंभु प्रसाद।
ता जीवन उत्तम बनत, लोग कथत करि याद।।68।।

लोक लोग शिक्षा अनुसारे। राष्ट्र समाज होत निरमारे।।
संगति बल उपजइ आचारा। बल प्रवृत्ति पाइअ संस्कारा।।
गोत कर्म जग जासु पुनीता। ता मति चिन्तन करु जग प्रीता।।
भाखिय अत्रि सहित ऋषि नाना। शंभु सभा प्रमान पुराना।।
सुख दुख जग प्रभु रूप तुम्हारा। पर न करु कोउ दुख स्वीकारा।।
स्वर्ग पवर्ग नाथ मन माया। हित कर जौन देहु सोइ काया।।
ऋषि मुनि देव लोक हितकारी। जानि प्रभू सब शरण तुम्हारी।।
भाव विनीत सुनिय ऋषि बयना। सोह मुदित मन शंभु शिवैना।।
बनिय लोक हित शिष्य समाना। धरत हृदय ऋषि प्रज्ञा ज्ञाना।।
समय नुकूल लोक हित मानी। भल जो सोउ ऋषि अनुदानी।।

राम समान देव नहि आना। जासु जनम बल यज्ञ निधाना।।
पुनि ऋषि संगति बाल विवाहा। विचरत विपिन गहे ऋषि राहा।।
सुनहु देव ऋषि दम्पति चरना। जग अनुकूल आपु शिव वरना।।
जित जे राम आचरण साधे। भर जीवन चाहे कुछ आधे।।
तानुसार बनु तारन आपन। लोक दोष अघ पाप निपातन।।
परहित सदाचार परसंगा। निशि दिन बरसावत हरि अंगा।।
सुनत लाग मन ढेर पियारू। मुद महेश डमरू झनकारू।।

राम आचरण भांति जग, प्रज्ञा पुराण स्वरूप।
शिवम शिवा दम्पति मुखे, ऋषि पसराये धूप।।69।।

जगत विदित त्रिदेव समाना। देव न आन श्रेष्ठ शिव माना।।
त्रिधा शक्ति अनुसारे ताही। पूजित पारवती जग मांही।।
जन विज्ञानी वेद पुराना। गाइअ शिव पूजन सुख नाना।।
यदपि विवाह करिय मिलि देवा। लेन शंभु ते निज सुख सेवा।।
बल सन्तति नाशन असुराई। मिलि सुर सकल विवाह रचाई।।
इहि कारण बिनु ऋषि उपदेशा। बनत न देव गठन लव लेशा।।
होत न यज्ञ सुकर्म महीतल। तौ बाढ़त नहि देव सभी बल।।
मनुज सुकर्म गठन सुर दल का। जौ भल तौ खण्डन खल बल का।।
भंजन जहां आपु बल बूता। करत न रार अन्याय अकूता।।
काह मोह नहि लगत पियारी। आपन देह भले नर नारी।।
दिहे चोट को पाउ न पीरा। केसस होइ नहि दुखी अधीरा।।
सुख दुख मोद अमोद उहासी। बनत न केहि मन शोक उदासी।।
ढूढ़ि ढूढ़ि ऋषि प्रज्ञा विचारा। लगेउ सुनावन शिव दरबारा।।
नाथ सुनहु हमरे मन जोऊ। दीन्ह तुम्हार आन न होऊ।।
करत समर्पित हित गनि आपन। हेतु हरन भव शोक व्यथापन।।
चित्त चरित्र चिन्तन सदचारा। रूप सुभल मन गंगा धारा।।
व्यापित कण कण तत्व तुम्हारा। उमा महेश रूप वर दारा।।
उपजत रोग अपथ्य अहारे। ग्रह कोपहिं चिन्तन दुष्चारे।।
जौ वर्जित व्यवहार सुहावा। देत दण्ड तुम भूत कहावा।।
मुक्ति न बिछुड़न भव दुख हारी। कथ तुम्हार दर्शन हितकारी।।
तथ कथ यज्ञ जाप सतकर्मा। पसरावत शुचि सुख प्रति घर मा।।
तन समान मन मिलत न काहू। मनसा शक्ति प्रचण्ड प्रवाहू।।
ईंधन आहुति तन गह जैसे। दैहिक प्रतिमा उपजइ वैसे।।

भले मनुज भव रहत सम, पर बल बुधि मुख भिन्न।
गुण स्वभाव कर कर्म से, केउ प्रसन्न केउ खिन्न।।70।।

जोर जवानी पाइ दिन, को मन नहि इठलान।
रूप देखि को मोह नहि, रोग न लह को प्रान।।71।।

जहां चार सदचार प्रकाशा। पूजिय आतम देव विकासा।।
तहं पुरुष शिव उमा स्वरूपा। कुल उपजइ गणपति अनुरूपा।।
लोक मनुज तन मुक्ती धामा। होहि नाहि जौ भक्ति विरामा।।
साधन धर्म कर्म व्यवहारे। पाउ भगति नव सिद्धि प्रकारे।।
भाव भावना श्रद्ध विसवासा। लगन कामना पूरक आशा।।
देव साधना मति परमारथ। अहं यातना मिलु पथ स्वारथ।।
निष्ठा कर्म सुमंगल कारी। करि इत होहिं सफल नर नारी।।
सृष्टि व्यवस्था विधि कल्याणी। भव हितेश रह ऋषि मुनि वाणी।।
सुनि सो शंभु उमा मन लागा। आगिल सुनन्ह करिय अनुरागा।।
जिन दीखा तिन भयउ वरीशा। नव दम्पति जोरी गौरीशा।।
युगल रूप छबि हारि निहारी। होही मुदित देव ऋषि नारी।।
जग जननी छबि सोहत बामा। अक्षर पुरुष महेश्वर दामा।।
सृष्टि व्यवस्था सुनिय दयाला। को वरनै महिमा तेहि काला।।
ज्ञान प्रदायक आतम बोधा। पावन परम जनम युग शोधा।।
शास्त्र नियम यम व्रत अनुशासन। जौन मनुज आदर्श उथापन।।
युगल छटा सन्मुख सो गावा। मनहुं लाग जेस सुधा चुआवा।।
वर्ण आश्रम शुचि संस्कारा। धरम करम आतम परिकारा।।
जीवन मरण पर्व तीर्थाटन। व्यवहारिक तप योग उपासन।।
जित विधि लोक मनुज कल्याना। कह ऋषि सकल सुनिय शिव ध्याना।।
सत्य विवेक सुसंयम शीला। पथ आदर्श गृहस्थी कीला।।
बनु परिवर्तन चिन्तन चेतन। ऋषि प्रज्ञा थल शैल निकेतन।।
नीति सुरत्व सकल युग हितकर। जौन तौन रह बरसि शिवम घर।।
आत्म शोधन यज्ञ विधाना। नीति सकल ऋषि वर अनुदाना।।
सुखानन्द उर बाढ़ा ताके। श्रवन समानेउ सो स्वर जाके।।
अमृत रस अस नहि कहुं बरसा। जेस ऋषि भाखि शिवम गृह परसा।।

प्यार प्रेम सहकार सुख, शान्त लोक मम ताइ।
दूजो थल नाहिय मिलत, जहां न अस कुल आइ।।72।।

जे दम्पति जीवन वृद्ध सेवी। सो पुनीत शक्ती लह देवी।।
वृद्धाशीष आयु बल कारी। सन्तति जीवन हेतु सुखारी।।
ऋषि भाखेउ सृष्टी रचनाई। पूरब तप करु सकल भलाई।।
तप पाछिल कै इहि परनामा। निज कल्यान असम सन्ताना।।
धर्म गृहस्थ तीन व्रत बन्धन। बा वृद्ध सेवा दम्पति बल धन।।

त्रय साधे लह जीवन ज्योती। सकै आन दइ तन सुख स्रोती।।
तीनहु जीवन रीढ़ समाना। लह पालक तन दिव्य खजाना।।
आन दीन्ह जो सो बनु आपन। करु प्रभावित वंश मनापन।।
जहं अस भाव साधना भारी। तेहि घर सनतति बनु संस्कारी।।
सो परिवार देव अनुहारा। बल सुरत्व मिलु चारिउ वारा।।
कलि कषाय कल्मष कुठराई। तेहि अवलोकि फिरइ बगि लाई।।
रोग ग्रह जित दोष धरा के। भूत प्रेत फिरु ताहि डरा के।।
संस्कार जहं अस श्रुति पाठन। बसइ स्वर्ग तहं सुख इन्द्रासन।।
पुण्य परम परमारथ काजा। भल कुल ते भल देश समाजा।।

देव वृत्ति अनुसार जौ, बसइ धरा परिवार।
देव बसहि भूतल तइस, आदि भांति चहुंवार।।73।।

आदि अनादि आज अनुसारे। बढ़न्ह लोक घर सुर परिवारे।।
भल उपदेश करहिं ऋषि वाचा। एक नाहि गढ़ि गढ़ि बहु ढांचा।।
देन शंभु उपदेश उद्देशा। होन सरेख मनुज सर्वेषा।।
तानुसार शासन अनुशासन। करि पोषित करु मनुज उथापन।।
कथिय देव ऋषि विनय सुनावत। ध्याइ शंभु पद सीख सिखावत।।
हेतु गृहस्थी करन्ह प्रवेशा। पूरब जप तप उचित महेशा।।
तौ परिवार मिलइ इहि ढंगा। मन पूरक जीवन रह संगा।।
आत्मीयता संग अध्यातम। सत्य सनेह सुभाव निभातम।।
शिष्टाचार नीति सहकारा। न्याय धर्म पुरुषार्थ प्रकारा।।
सदुपयोग मितव्ययिता प्रीती। सहित व्यवस्था बल नृप नीती।।
संयम श्रम ईमान प्रभारी। मति दुर्व्यसन दुरावन वारी।।
जानहिं आपु भांति दुख आना। साधक संयम व्रत विधि नाना।।
जेस चह वंश आपु बनु वैसे। मिलु तेस सन्तति कह जग ऐसे।।
जौ चह मनुज देव हित नाता। करु भल काज सुपावन गाता।।
जहां सुमति तहं सम्पति नाना। एक नाहि अस विश्व बखाना।।
जहं कुमति कलिकाल तहां पर। कर्म नारकी भाउ वहां पर।।
जीवन हेतु व्यवस्था भल धन। अनुशासन सयंम अनुबन्धन।।
बसहिं तहं खल रोग कुठारा। जहां न शास्त्र प्रेम शिवचारा।।

ऋषि विचार सुनि विश्वपति, आपु जगत हित मानि।
एवमस्तु बोलेउ वचन, परम मोद मन सानि।।74।।

ऋषिन्ह महेश सुसीख सुनाई। जौन सुखद सम्पति सुरताई।।
कुल अनमेल मेल परिवारू। लोक लोग बिलगाव विदारू।।
सकल दोष हर कुमति विभंजन। हर हरखन सब विधि मन रंजन।।

सुर मानव आनन्द प्रदाता। मन मनसा पूरक प्रति गाता।।
धर्म धरोहर धरनि धरातल। धरत धेनु महिमा उदयाचल।।
देवातम हिमगिरि त्रिपुरारी। सहित शिवा मुख वैन उचारी।।
धन्य धन्य ब्रह्मर्षि मुनीशा। तुम ते वरसु सुधा सब दीसा।।
जो मम चाह दीन्ह तुम सोऊ। पाइ मुदित मन हम दोउ होऊ।।
देहुं काह तोहि सकुच बिहाई। मांगहु ऋषिवर शंभु सुनाई।।
जीवन जन्म वचन भल मानी। सहित नेह बोले मृदु बानी।।
नाथ तुम्हार दीन्ह यह गाता। हाथ माथ जीवन निशि प्राता।।
सब तुम्हार कछु मोर न कीना। वाणी प्रेरन बल तुम दीना।।
तुम निर्देश सन्देश तुम्हारू। करिय कथन बनि दास बेचारू।।
तिमे न मोर सम्पदा लागी। लागि तुमहि पद बनिय सुभागी।।
बिन तुम कृपा न करि जग मोहा। भले वचन सब विधि भल सोहा।।
हम का नाथ सिखावन वारू। महिमा तुम सुनु शिष्य प्रकारू।।
भले सिखावन करुं दिन राती। दूषित रहत हृदय मन छाती।।
नाथ करहु इतनी प्रभुताई। बनु उर बाहर दोष पराई।।

आप विदारन दोष दुख, करिय देव ऋषि मांग।
सुर सुरता जेहि विधि बढ़हि, करि ताते अनुराग।।75।।

नमः शिवभ्याम ति सुन्दराभ्यामत्यन्तमासक्तहृदम्बुजाभ्याम्।
अशेषलोकैकहितंकराभ्यां, नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।1।।
नमः शिवाभ्यां कलिनाशनाभ्यां कंकालकल्याणवपुर्धराभ्याम्।
कैलाशशैल स्थित देवताभ्यां, नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।2।।
नमः शिवाभ्यामशुभापहाभ्यामशेषलोकैकविशेषिताभ्याम्।
अकुण्ठिताभ्यां स्मृतिसम्भृताभ्यां, नमो नमः शंकरपार्वतीभ्याम्।।3।।

जय शम्भो विभो रुद्र स्वयम्भो जय शंकर।
जयेश्वर जयेशान जय जय सर्वज्ञ कामदम्।।4।।
नीलकण्ठ जय श्रीद श्रीकण्ठ जय धूर्जटे।
अष्टमूर्तेऽनन्तमूर्ते महामूर्ते जयानघ।।5।।
जय पापहरानंगनिः संग भंगनाशन।
जय त्वं त्रिदशाधर त्रिलोकेश त्रिलोचन।।6।।

जय त्वं त्रिपथाधार त्रिमार्ग त्रिभियर्जित।
त्रिपुरारे त्रिधामूर्ते जयैकत्रिजटात्मक।।7।।
शशि शेखर शूलेश पशुपाल शिवाप्रिय।
शिवात्मक शिव श्रीद सुहृच्छ्रीशतनो जय।।8।।
सर्व सर्वेश भूतेश गिरिश त्वं गिरीश्वरः।
जयोग्ररूप भीमेश भव भर्ग जय प्रभो।।9।।
जय दक्षाध्वरध्वंसिन्नन्धक ध्वंसकारक।
रुण्ड मानिल कपाली त्वं भुजंगऽजिनभूषण।।10।।
दिगम्बर दिशानाथ व्योमकेश चितापते।
जयाधार निराधार भस्माधार धराधर।।11।।
देव देव महादेव देवतेशादिदैवत।
वह्निवीर्य जय स्थाणो जयायोनिजसम्भव।।12।।
भव शर्व महाकाल भस्मांग सर्पभूषण।
त्र्यम्बक स्थपते वाचम्पते भो जगताम्पते।।13।।
शिपिविष्ट विरूपाक्ष जय लिंग वृषध्वज।
नील लोहित पिंगाक्ष जय खट्वांगमण्डन।।14।।
कृत्तिवास अहिर्बुध्न्य मृडानीश जटाम्बुभृत्।
जगद्भ्रातजगन्मातर्जगत्तात जगद्गुरो।।15।।
पंचवक्त्र महावक्त्र कालवक्त्र गजास्यभुत्।
दशवाहो महाबाहो महावीर्य महाबल।।16।।
अघोर घोरवक्त्र त्वं सद्योजात उमापते।
सदानन्द महानन्द नन्दमूर्ते जयेश्वर।।17।।
एवमष्टोत्तर शतं नाम्नां देवदेवकृतं तु ये।
शम्भोर्भक्त्या स्मरन्तीह श्रृण्वन्ति च पठन्ति च।।18।।
न तापस्त्रिविधस्तेषां न शोको न रुजादयः।
ग्रह गोचर पीडा च तेषां क्वापि न विद्यते।।19।।
श्रीः प्रज्ञारोग्यायुष्यं सौभाग्यं भाग्यमुन्नतिः।
विद्या धर्मे मतिः शम्भोर्भक्तिस्तेषां न संशयः।।20।।

शिव अष्टोत्तर नाम शत, विनय करिय ऋषिराय।
आशिष दक्षिण दीन्ह शिव, पाइ मोद मन छाय।।76।।
लागि चरन भाखिय बैन, रहउ नाथ प्रसन्न।
जावहि अनबन मोर बनि, रहउं न तुम ते भिन्न।।77।।
मैं शरणागत नाथ तुम्हारे। तुहीं चराचर भय दुख हारे।।
प्रभु प्रसाद जाके उर भीजा। ताको मिलत नयन गुण तीजा।।

जानि सफल विनती मुख बानी। शरण जनम भर नाथ भवानी।।
प्रेम पुसुप करि अर्चन अरपन। आगु न ज्ञान ध्यान जग वन्दन।।
नाथ अनुग्रह मोपर कीजइ। जो भल आगु सोइ बल दीजइ।।
विनवत नाथ भावना भांती। करहु कृपा मांगहु दिन राती।।
नहि जानउं महिमा प्रभुताई। वंश अभिमान फिरउं इठलाई।।
पुरवहु सकल मनोरथ मोरे। जानिय दास सुसन्तति छोरे।।
जौ निज भूल मने सुधि आवइ। बड़ पछिताव व्यापि दुख जावइ।।
सो अन्तर दुख चिन्ता स्वामी। तुम बिन को जारइ जग खामी।।
भूल परायण दोष पराधा। बनै न अब आगिल दुख बाधा।।
दूरि दुरायउ कृपा निकेता। वर मांगहु इहि वशं समेता।।
कारण जगत देव भव कुल के। उमा सहित परमेश्वर जग के।।
तुम नारायण रुद्र स्वरूपा। निवसत अन्तर आत्म स्वरूपा।।
जीवन जीव तुंही रखवारे। जागत सोवत बाहर द्वारे।।
शान्त स्वरूप नयन त्रय धारी। नीलकण्ठ शंकर त्रिपुरारी।।
हरत ताप त्रय परसिय मंगल। इहि जोरी छबि परम सुमंगल।।
नमो नमामी त्रय पुर स्वामी। भस्मांगी तन अन्तरयामी।।
स्थित सृष्टि प्रलय शक्ती के। सुखद शुभद तुम जग भक्ती के।।

हाथ जोरि पग लागि ऋषि, युगल चरन प्रभुताइ।
पाइ विनय पद जननि कै, सब मिलि शीश नवाइ।।78।।
देवि विनय करि देव जेस, सृष्टि मातु मन मानि।
विनय सोई ऋषि कुल करिय, सृष्टी सृष्टा जानि।।79।।

शतनाम प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसाद मात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती।।1।।
सती साध्वी भव प्रीता, भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी।।2।।
पिनाक धारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः।।3।।
सर्व मंत्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः।।4।।
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्व विद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञ विनाशिनी।।5।।
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमंजीररन्जिनी।।6।।
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वन दुर्गा च मातंगी मतंगमुनिपूजिता।।7।।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव बाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः।।8।।
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुल प्रेमा सर्व वाहन वाहना।।9।।
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी।।10।।
सर्वासुर विनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा।।11।।
अनेकशस्त्रहस्ताच अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैक कन्या च कैशोरी युवती यतिः।।12।।
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्त केशी घोर यपा महाबला।।13।।
अग्नि ज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी।।14।।
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी।।15।।
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानाम शताष्टकम्।
ना ऽ साध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति।।16।।
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्।।17।।
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नाम शताष्टकम्।।18।।
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात्।।19।।

सीख विनय सदभाव भरि, चरन सरोज निहारि।
कृपा चाह जग नाथ कै, चाहत प्रेम उभारि।।80।।
गुण वरनत महिमा कथत, छबि निरखत दिनरात।
जापत जग हित मंत्र मुख, विगते सात प्रभात।।81।।
मन अघात नहि नैन थकु, रूप वधू वर देख।
उपजत उर अब आउ नहि, ऐसो पर्व विशेख।।82।।
गिरिजा वधू रूप वर शंकर। परम मनोहर शुभद सुखद कर।।
युगल छटा तन दिव्य बसन धर। बिछुड़इ नाहि सुहाइ निरन्तर।।
नाहि कछुक दिन रह जीवन भर। देहु इहै सुख देव महेश्वर।।
छबि दुर्लभ जो बनु इहि अवसर। परम सुभागी बसु जे सब अन्तर।।

बार बार मांगहु इहि प्रभुवर। भगति भाव रहु कइव जनम भर।।
छटा स्वयम्बर पट पीताम्बर। धरि ह्रदय इहि भाव भजन कर।।
भव बन्धुत्व हेतु भव हितकर। जौन करिय अस गौरीशंकर।।
आन न कीन्ह न कोउ आगिल कर। जगत पिता जग जननि स्वयम्बर।।
वेद शास्त्र इहि गान गान कर। जग निर्माण विधान करन्ह हर।।
दिव्य अलौकिक बड़ वर शंकर। परिणय उत्सव रचिय सुसुन्दर।।
शिवम शिवा वन्दन अस ऋषि कर। मुक्ति मनोरथ पूरण सब कर।।
गिरिजा वधू रूप वर शंकर। नमो नमामी फिरि फिरि चित धर।।

ऋषि कुल जगहित सीख दै, मानि जगत आधार।
अन्तर परम कृतार्थ बनु, होन बिदा तइयार।।83।।
नाथ बनिय नहि मोहि ते, चाह क्षमा अनुराग।
लोकाचार नुसार देइ, सीख निमंत्रण भाग।।84।।
आशिष शक्ति बिदाइ धन, शिष्य नुहार शिव दीन्ह।
मुदित देव ऋषि चलि परेउ, आपु भवन पथ लीन्ह।।85।।
व्याह कर्म करि शिव शिवा, बदले आपु स्वभाव।
बनु प्रकृति अनुसार तेहि, बनु अदभुत बदलाव।।86।।
गृह आश्रम पालन करन, जौन विचार विधान।
ताही पथ चाहेउ चलन, गिरिजापति भगवान।।87।।
लागत प्रिया अंग प्रिय, शोभा अतुल अपार।
बूझि समय भल विश्वपति, अन्तर भाव उचार।।88।।

सुनहु उमा प्रज्ञा प्रभुताई। जेहि भल तेहि भल बनु सब ठांई।।
धरनि धरोहर धर्म अकूता। व्यापु जहां तहं सुख अदभूता।।
ब्रह्म व्यापु भव प्रज्ञा नुसारे। भल प्रज्ञा तहं भल परिवारे।।
देश काल बन्धन भव जेते। सकइ सताइ न प्रज्ञा खेते।।
जप तप ज्ञान ध्यान आहुतियां। करहिं बलद प्रज्ञा पथ गतियां।।
ऋषि प्रज्ञा धरु निज आचारू। मांनु ताहि सुख धन संसारू।।
गनु सरेख सो गुरु ऋषि बानी। विश्व हितारथ जांनु भवानी।।
सन्तति विचरन पूरब प्रिया। बनि यज्ञीय जियहिं पति त्रिया।।
तौ सन्तति बनु देव सुखारी। तन पुरुषारथ मंगलकारी।।
ऋषियन्ह सीख सुनिय जोउ काने। प्रिया अभल गनु ता बगिलाने।।
पति परमेश्वर वच निर्देशन। उमा मने भा गहब विशेषन।।
कह महेश सुनु प्राण पियारी। प्रज्ञा परम पुनीत तुम्हारी।।
मनानन्द प्रद तन दुखहारी। पश्चाताप बिनाशु पछारी।।
करि तप देव चाह करि एही। तुम्हारो तनय हतय खल देही।।

सुर माता पूरक अभिलासा। करि जग बड़ देवत्व प्रकाशा।।
लोक व्यवस्था रहु भल ताते। जो जग असुर भावना घाते।।
चित चिन्तन अस करहु उथापन। जिते सुखी सुर धर्म धरापन।।
होई मेल संगेउ अनमेला। जग हित भाव विचरु सब बेला।।
सुनि मनभावन स्वामी बैना। भई मुदित मन तनया मैना।।

भाव विनीते जोरि कर, मृदुल बैन उचारि।
प्राण प्रिया पति ते कहिअ, निज अन्तर उद्गारि।।89।।

प्रीति न जाइ बढ़हि बरु प्रीता। कह सादर पति ते जग रीता।।
नाथ सुनहु इक मोर सिखावन। कहन्ह चहसि मिलु आयसु पावन।।
चाहत नाथ कृपा इहि ढंगा। सधइ जथा विधि गृही प्रंसगा।।
सो चिन्ता उपजी मन मोरे। कारण कौन कहउं कर जोरे।।
यद्यपि शैल पिता कुल नगरी। सोहत नाहि रहब पति कखरी।।
शैल निवास जीव जग बासी। पितु कुल नेर करइ जग हासी।।
लोग हंसहि करि वाद विवादा। लाज घटइ दोउ कुल मरजादा।।
बसब शैल इहि हेतु न ठीका। नाथ कतहुं चलि बसु थल नीका।।
शैल बास अब नाहि उचीता। जहं करहीं तपसी थिर चीता।।
बनु दूजे नैहर न द्रोही। पाछिल विपत्ति अबै सुधि मोही।।
पद सेवी करि चरन प्रनामा। पुरवहु नाथ वचन इहि वामा।।
गृही व्यवस्था साधन सारे। बिनु गृह ज्ञान कहां अरुवारे।।

यदपि प्रज्ञा विद्या परम, ब्रह्म शक्ति भरि देति।
पर मर्यादित गृह बिना, मिलत न मान अगेति।।90।।

विनवहुं नाथ लागि चरनाई। जौ चह धर्म गृहस्थ उथाई।।
तौ करु ठांव बसेरा कोऊ। प्रियता आपु मने जहं होऊ।।
बिनु गृह जीवन भले आपु भल। पर परिवार हेतु गनु अनभल।।
रहत हीन दम्पति प्रभुताई। तेहि विलोकि जग करत हंसाई।।
जौ चाहा गौरव परिवारू। तौ गृहस्थ करु गृहे गुजारू।।
निज गृह जीवन पाछिल नांई। चाहउं नाहि रखन्ह इहि दांई।।
होवत नाथ गृही अनुरागा। गृह समेत सन्तति सुख आगा।।
तुम जगदीश्वर अन्तरयामी। सब जानत जीवन जिव स्वामी।।
उमा वचन शंकर मन भावा। सुनिय श्रवन आनन्द समावा।।
मानिय आपु अंग अधियारू। नेह सहित भल गनि स्वीकारू।।
लगेउ करन्ह मन चिन्तन योगी। तीन लोक पति लोक वियोगी।।
जेहि विधि धर्म गृहस्थ उभरहीं। शिव संकल्पित ता अनुसरहीं।।
हित गृहस्थ हेतू परिवारे। जगत ईश चलु सुमति आधारे।।

जहां उमा भल शानित आपू। उपजहिं वंश वीर परतापू।।
सोच समझि योगी बल योगे। आपु उमा सन वचन प्रयोगे।।
लगेउ बतावन दीन दयाला। जग जननी स्वामी प्रतिपाला।।
प्राण प्रिया मोहि परम सुपावन। चिर दिन चाह सदा मन भावन।।
सुनहु प्रिया अध अंग निकेती। भल विचार जो तुम मन चेती।।
जासु माथ भल प्रज्ञा पानी। ऋषि मुनि भल कहि ताहि बखानी।।
तुम कुल धुरी देव कुल माता। मति तुम्हार जग जीवन त्राता।।
तुम समान जे गृही सयानी। सकै देखि जीवन अगवानी।।

गृहे धरम पालन करन्ह, उमा वचन अनुसार।
मन भावा त्रिपुरार के, खोजन ठांव अगार।।91।।

बोले वचन लोक सुख दानी। सुनहु प्रिया जगवन्द्य भवानी।।
काशी पुर थल मोहि सुहावन। होइ तहां बहु विधि गुण गावन।।
पावन परम धामदा धरनी। बसइ तहां गंगा वैतरनी।।
हिम ते दूरि मनोहर मोहूं। जहं तक आश लगै प्रिय तोहूं।।
गृह सम्वाद परस्पर ढंगे। कह अनुसार उमा शिव गंगे।।
तुम भल जहां हमहि सोइ भावा। मीन मेख नहि नुकुस लगावा।।
पर एकु संशय बनु मन मांही। बसै गंग केस काशी ठांही।।
बहहिं निरन्तर धारा संगेउ। तौ विशेष उहि थिर केहि ढंगेउ।।
लागत प्रिय सब सीख तुम्हारे। स्वामि सहित गुरु रूप हमारे।।
इहि जानन्ह हमरे मन उपजा। बोली मृदुल बैन अस गिरिजा।।
नाथ सिखावन बड़ मन भावन। सुनिय रहब भरि जनम निभावन।।
काशी धाम धाम केस गंगा। नाथ कथहु इहि कथा प्रसंगा।।
विश्व नाथ जग जननी स्वामी। सुनि भरि मोद कथन भै हामी।।
बोले वचन दिगम्बर राई। जौन सुनिय मन उमा सुहाई।।
कह महेश सुनु जगती जननी। योगे सुर घर काशी धरनी।।
बसहिं गंग तहं जग बिख्याता। मुक्ति दायिनी जीवन त्राता।।
तहं पूजन बहु भांति हमारे। सुर नर करहिं भगति उर धारे।।
ध्वनि गूंजति हर हर गंगा के। प्रविशत जौन श्रवन रन्ध्रा के।।
आपुहि बनत कलुष कलि छारा। काशी धाम सकल तन तारा।।
आगम निगम पुरान बखाना। काशी महिमा स्वर्ग समाना।।

श्रवन सुनिय प्रभुताइ बड़, पावन काशी धाम।
प्रगटि गंग जब तब उहां, फिरहिं करहिं विश्राम।।92।।

दूरि नेर इच्छा अनुसारे। बिचरहि जब तब सांझ संकारे।।
एक दिवस अवसर अस आवा। मुदित गंग कुछ दूरि सिधावा।।

सन्मुख कुटी आश्रम देखा। भा आकर्षण लखिय विशेखा।।
रहि न गवा कुटिया तट आई। करि अवलोकन बड़ हरखाई।।
लाग परम प्रिय ठहरन्ह चाहा। उभरु सनेह अपार अथाहा।।
देखि अतिथि कुटिया महतारी। बहिरानी स्वागत करि भारी।।
आरति कीन्ह सु आसन दीन्हा। जेस दिखान गंगा तेस चीन्हा।।
अनसूया जग जननि भवानी। पति सेवी तिय शक्ती खानी।।
हारक लोक शोक सन्तापा। काहू पर विधि काहु वियापा।।
करि विवाद पूंछिय कुशलाई। पुनि कह मातु कथहु केस आई।।
अनसूया प्रभुता पहिचानी। प्रथम गंग निज नाम बखानी।।
जानिय नाम सुपावन ताई। वच विनीत अनसूय सुनाई।।
तुम प्रिय ढेर मोरे मन भावत। नेह सहित इक चाह सुनावत।।
बसहु मोरे गृह भव तन तारी। सहित सकुल सकु पांव पखारी।।
मिला वैद्य रोगी अनुसारे। चाह दोउ कै एक प्रकारे।।
मांग असूय गंग स्वीकारी। पुनि आपन मन चाह उचारी।।
बोली गंग सुनहु अनसूये। काशि बसब हम जौ करु तू ये।।
पाति व्रत ते शिव तप ध्याना। करु जौ एक बरस कै दाना।।
तौ काशी बसु धाम तुम्हारे। आपन पाप संकहु करि छारे।।
दोउ जग जननी परम पुनीता। दोउ ब्रह्मानी बल सम सीता।।
आप परस्पर बल अनुदानी। दूजहूं एक बहुत सनमानी।।
बनु ताते जग परम हितारथ। पूरक मनुज कामना स्वारथ।।
जेहि विधि होइ लोक कल्याना। पद जननी हित राखब ध्याना।।

अनसूया वच गंग कै, मुदित करिय स्वीकार।
पतिव्रत फल इक वर्ष कै, दीन्ही तुरत उतार।।93।।
स्वीकार गंगा करिय, काशी लेन बसेर।
दोउ जग उपकार करि, आपस दइ करि फेर।।94।।

चीन्हि दोऊ कै भल विधि करनी। जेस भा प्रिया आगु सो बरनी।।
देखि समर्पण दोऊ तिया कै। भै तिन के वश शक्ति जिया कै।।
पाइ समर्पण पथ सदचारा। इते चाह तहं रहन्ह हमारा।।
सो प्रिय मोहि लगत मन ढेरे। करु जे भव कल्यान उघेरे।।
सत्य कथउं सुनु प्राण पियारी। बनेउं पंच मुख तहं अवतारी।।
आभा ज्योति एकाएक पावा। मन दोऊ विस्मय बड़ आवा।।
नेह सभीत वचन भगताई। विनय नमन बहु भांति सुनाई।।
नाथ नमामि नमामि अनामय। पुरवहु व्रत सर्वेश दयामय।।
पंचावरण रूप प्रभुताई। करहु अनुग्रह मोपर आई।।

काशी बसन्ह आपु वर दीन्हा। सो पुरवन्ह अवसर विधि कीन्हा।।
जगत भाखु प्रभु कृपा अनन्ता। पुरवहि मनसा तारहिं अन्ता।।
जापर कृपा तुम्हारि गोसांई। तापर कृपा परइ भहराई।।
नाथ देव हित जग सुखकारी। तुम समान को दाता भारी।।
मोपर किहेउ कृपा अनकूता। करम सुपावन इहि थल बूता।।
प्रगटेउ पांच मुखे आकारे। तौ करु पांचों रस उपकारे।।

मोर गंग कल्याण करि, नाथ भले तुम आव।
इहि धरनी चाहत बसइ, अब तीनों प्रभाव।।95।।
नाम अत्रीश्वर मोर परु, गंग बसै तेहि ठांव।
पतिव्रत तहं भल विधि सधै, होइ न सपनेव बांव।।96।।
तहं निवास अनुकूल बड़, इहि अवसर मोहि लाग।
ताहि ठांव चलि वास करि, गृह विचरन अनुराग।।97।।

प्रभुता धरनि प्राणपति बानी। सुनिय उमा अतिशय हरखानी।।
कहिअ वचन प्रिय जौन पियारू। सो प्रिय मोहि चाह अनसारू।।
तहं प्रभु काया पति सेवकाई। महिमा बसइ सगंगा माई।।
सधइ गृही व्रत सब विधि नीके। जेहि धरनी तप ऋषि पतिनी के।।
भाग्य परम पायउं अस ठाऊं। चलि तीरथ गृह धाम बनाऊं।।
मिलइ सगुन जीवन हितकारी। नाथ करहुं तहं चलन्ह तयारी।।
जानि गमन काशी पुर नगरी। हिम गिरि जीव दुखाने भितरी।।
सब जानन्ह जिज्ञासा केही। काह बनत प्रभु शैल अनेही।।
घेरि देवगण पूछन्ह लागे। घिरि दुइ चारि लाइ अनुरागे।।
गृह आश्रम हिते जग हेता। वचन सुनाइअ कृपा निकेता।।
आन हमार सुरन्ह हित जैसे। करन्ह शास्त्र ऋषि आयसु ऐसे।।
गमनब भले प्रीति गिरिराई। छूटइ नाहि तुम्हारि सगाई।।
भयउ दुखी जन प्राणी माथा। छूटब साथ जानि गिरि नाथा।।
भीर बड़ी भै शिव दरबारे। बरनि न जाइ विषाद अपारे।।
सजल नयन शिव शिवा निहारत। कहि प्रिय वचन मनो दुख टारत।।
सकहिं न बोलि विकल गण लोगा। शोक जनित करु याद वियोगा।।
नाथ न नेह बिसारु हमारी। एक नाहि सब वचन उचारी।।
हिम कुल आइ नयन जल ढारी। वाक न आउ सप्रेम निहारी।।
सासु ससुर हिम ऋषि समुझाये। नाथ वियोग भये दुख आये।।
रहु लायक सेवक यह जैसे। आयसु पाइ करब हम तैसे।।
औरहु सबहिं उमा समुझाई। पति सुख दुखे रहिउ हरखाई।।
होइ न जब लौं भवन तयारा। बाधा विशिख बनै प्रति वारा।।

नायक शैल जगतपति ईश्वर। संग गिरिजा कैलाश पतीश्वर।।
हिम ते विदा होत दुख वैसे। राम गमन वन अवसर जैसे।।
लागहि चरन देहि अंकवारा। रह जे यथा योग्य तेहि ठारा।।
दुखद विदाइ विशेष उदासी। जौन रहेउ हिम गिरि थल बासी।।
उमा सहित शंकर गिरिराई। लीन्हेउ सजले नयन बिदाई।।

चलन्ह व्यवस्था शिव करिय, गण सहयोगी संग।
चढ़ि नन्दी कीन्हे गमन, जेस चलु शाम विहंग।।98।।

बारहि बार जोरि युग पानी। उमा महेश कथिय मृदु बानी।।
आउब बेगि करब नहि देरा। निश्चित पुनि डारब हिम डेरा।।
बनु जेहि ते सब ह्रदय सुखारी। बोले सोइ वचन त्रिपुरारी।।
हिम गिरि चौखट शीश नवाई। चलु महेश ऋषि देव मनाई।।
हिम जन प्रेम विशेष विलोकत। ह्रदय श्रद्धा अन्दर दुख घोरत।।
जौन शंभु उपदेश घनेरा। करन्ह लाग सोई मन फेरा।।
शील सनेह न होत प्रभाऊ। होत भले जल नयन रुकाऊ।।
काल वियोग पाइ सब ठाढ़े। जहं तहं तुरत जयति स्वर बाढ़े।।
सबै विचार करै मन मांही। बिनु शिव शिवा शैल सुख नाही।।
तहां स्वर्ग जहं उमा महेशा। नेर न आवत लोक कलेसा।।
एकहि एक कथत मन बाता। धीर धरहि नयने जल जाता।।
जबहिं शिवा शिवा नयन ओटाने। मुख पोछत सब फिरु पछताने।।
शिव माया महिमा अनुसारे। बैन परस्पर जांहि उचारे।।
वेगि जात शिव नभ सम याना। अस चलि तेज नन्दि भगवाना।।
उतरे अत्रि धाम त्रिपुरारी। नमनेउ ऋषिन्ह शीश पग डारी।।
पाइ शिवा शिव बढ़ु अनुरागा। पुनि पुनि मुदमन सब पद लागा।।
बहुत तपिय अस सुख नहि पावा। जेस घर बैठेउ आज सुहावा।।
जनम कइब गनि पुण्य उदीया। आइ स्वयं गिरिजापति कीया।।
गंगा सकल सुमंगल मूला। सब सुख लाइ करिय अनुकूला।।
व्रत अनसूया पति सेवकाई। काशी धरनि भाग्य उभराई।।
सुमिरत जाहि मिटइ त्रय तापा। भवन बास चाहा तहं आपा।।

आदर आसन दीन्ह ऋषि, जानि सुमंगल मूल।
अब न व्यापु यम दूत भय, जहां शंभु त्रिशूल।।99।।
अनसूया ऋषि अत्रि मिलि, दीन्ह ठांव पहिचान।
देखि उमा शिव करि नयन, जानि बनब आधान।।100।।
बनेउ शोर काशी नगर, बास करहि त्रिपुरार।
फूले नाहि समाइ केउ, जयति करत चहुंवार।।101।।

गिरिजा गणन्ह समेत शिव, ऋषि आश्रम फल खाइ।
कीन्हे कुश आसन शयन, दूज प्रात दिन आइ।।102।।

विरचन शंभु भवन अदभूता। लगे जोहारन देव प्रभूता।।
शिव महिमा विश्वकर्मा माया। भवन बना सम स्वर्ग सुहाया।।
ऋषिन्ह कराइअ गृही प्रवेशा। रह जेस शास्त्र नुसार निदेशा।।
दम्पत्ति जीवन के प्रभुताई। कह महेश पथ शास्त्र निभाई।।
तानुसार गिरिजा हर गंगे। प्रबिशेउ आपु साधना संगे।।
साधक यदपि विशेष प्रकारा। तबहूं साधिय गृह उपचारा।।
नाहि कथन लीला संग लाये। अध नर नारि महिम प्रगटाये।।
बोले वचन सुनहु सुकुमारी। गृह आश्रम प्रारब्ध निवारी।।
नाशु दोष पिछ भय वर्तमाना। हेतु भविष्य रचइ कल्याना।।
कर्म योग गृह आश्रम जैसे। होहिं कामना पूरण वैसे।।
गृह आश्रम जीवन आधारा। साध न जे ते बनहिं गंवारा।।
जीवन मूल बिन्दु गृह धर्मा। दायक मुक्ति सतोगुण कर्मा।।
घटइ न तासु जनम भर बाधा। साधि न आपु गहिय अपराधा।।
गृह आश्रम गनु जीवन नाभी। इन्द्रिय हेतु सकल सुख चाभी।।
सत्य श्रद्धा अनसूय अलोभा। त्याग विषय शम दम निष्क्रोधा।।
दया दान इन्द्रिय निग्रह कर। तीर्थ आस्था सुर पूजन कर।।
निश्छलता सन्तोष अहिंसा। करु पर निन्दा नीति विध्वंसा।।
अनुष्ठान शुभ शौचाचारा। सहित श्राद्ध जे इतिक संवारा।।
धर्म गृहस्थ सफल बनु ताके। सुनहु प्रिया साधहु चलि वाके।।
तबहि गृही गृह गृह दिन नीके। सुनि स्वीकारि उमा भरि हीके।।
प्रभु प्रभुता बूझिय हरखाये। आउ जे गृह ते शीश नवाये।।
नाथ धरेउ जेहि हित इहि वेशा। सो पुरवहु हति देव कलेशा।।
काशी विश्वनाथ त्रिपुरारी। आसन गृह आश्रम निरधारी।।

गिरिजापति महिमा निरखि, मुदित भये सब लोग।
करिय वन्दना देव ऋषि, जेस जे जाहू योग।।103।।

गंगाधरं शशिकिशोरधरं त्रिलोकीरक्षाधरं निखिलचन्द्रधरं त्रिधारम्।
भस्मावधूलनधरं गिरिराजकन्यादिव्यावलोकनधरं वरदं प्रपद्ये।।1।।
काशीश्वरं सकलभक्तजनार्तिहारं विश्वेश्वरं प्रणतपालनभव्यपारम्।
रामेश्वरं विजयदानविधानधीरं गौरीश्वरं वरदहस्तधरं नमामः।।2।।

गंगोत्तमांगकलितं ललितं विशालं,
तं मंगलं गरलनीलगलं ललामम्।
श्रीमुण्डमाल्यवलयोज्ज्वलमंजुलीलं,
लक्ष्मीश्वरार्चितपदाम्बुजमाभजामः।।3।।
दारिद्र्यदुःखदहनं कमनं सुराणां,
दीनार्तिदावदहनं दमनं रिपूणाम्।
दानं श्रियां प्रणमनं भुवनाधिपानां,
मानं सतां वृषभवाहनमानमामः।।4।।
श्रीकृष्णचन्द्रशरणं रमणं भवान्याः,
शश्वत्प्रपन्नभरणं धरणं धरायाः।
संसारभारहरणं करुणं वरेण्यं,
संतापतापकरणं करवैशरण्यम्।।5।।
चण्डीपिचण्डिवितुण्डधृताभिषेकं,
श्रीकार्तिकेयकलनृत्यकलावलोकम्।
नन्दीश्वरास्यवरवाद्य महोत्सवाढ्यं,
सोल्लासहासगिरिजं गिरिशं तमीडे।।6।।
श्रीमोहिनीनिविडरागभरोपगूढं,
योगेश्वरेश्वरहृदम्बुजवासरासम्।
सम्मोहनं गिरिसुतांचित चन्द्रचूडं,
श्री विश्वनाथमधिनाथमुपौमिनित्यम्।।7।।
आपद् विनश्यति समृध्यति सर्वसम्पद्, विघ्नाः प्रयान्ति विलयं शुभमभ्युदेति।
योग्यांगनाप्तिरतुलोत्तमपुत्रलाभो, विश्वेश्वरस्तवमिमं पठतो जनस्य।।8।।
वन्दी विमुक्तिमधिगच्छति तूर्णमेति, स्वास्थ्यं रुजार्दित उपैति गृहं प्रवासी।
विद्यायशोविजय इष्टसमस्त लाभः, सम्पद्यतेऽस्य पठनात् स्तवनस्य सर्वम्।।9।।
कन्या वरं सुलभते पठनादमुष्य स्तोत्रस्य धान्यधनवृद्धिसुखं समिच्छन्।
किं च प्रसीदति विभुः परमो दयालुः, श्री विश्वनाथ इह सम्भजतोऽस्य साम्बः।।10।।

भवानीकलत्रं हरं शूल पाणिं,
शरध्यम् शिवं सर्प हारं गिरीशम्।
अज्ञानान्तकं भक्त विज्ञानदं तं,
भजेऽहं मनोऽभीष्ट दं विश्वनाथम्।।11।।
अजं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं गुणज्ञं,
दया ज्ञान सिन्धुं प्रभुं प्राणनाथम्।
विभुं भाव गम्यं भवं नीलकण्ठं,
भजेऽहं मनोऽभीष्टदं विश्वनाथम्।।12।।

गिरिजा गृही महेश घर, काशी पुर जग जानि।
लोक कामना सिद्धि प्रद, बूझि विश्व सन्मानि।।104।।
गृह आश्रम सन्मान करि, गिरिजापति त्रिपुरार।
बसे भवन काशी नगर, करन विश्व उद्धार।।105।।
प्रतिभा विकसु गृहस्थ कै, जैसे बनइ महान।
गिरिजापति सो पथ चलन, कीन्ह अगाड़ी ध्यान।।106।।
काशी विश्वनाथ शिव नगरी। शोभा गृह बैकुण्ठ ते उतरी।।
अशुभ असभ्य अगुन अलगाऊ। तेहि पुर ते करि आपु भगाऊ।।
जहं तहं देव रचइ घर आपन। मन जेहि शंभु उमा प्रियतापन।।

काहु न बड़ संगति मन भावा। काह मने नहि साथ कै दावा।।
यद भद्रं तन आसुव ढंगा। धरनि काशि बरसा संग गंगा।।
सुर मुनि वन्दन चलै निरन्तर। काशी बनु पुनीत सम मंतर।।
काशी सगुण रूप त्रिपुरारी। सहित उमा गृह धर्म गुजारी।।
पातक बूढ़ कुरोगी तन के। दीखइ काशि सुखद सब दिन के।।
स्वेदज अण्डज उदभिज प्रानी। आपु तरहिं शिव कृपा न जानी।।
होवइ ज्ञान भगति उद्‌गारा। दान धर्म कै खुला किंवारा।।
अधम अगुन नहि काशी डेरा। शायद बाह्य भूलि करु फेरा।।
सहजे तरइ सन्देह न काहू। जाहि न कोऊ सम दुख राहू।।
योग भोग पुर मोक्ष प्रदाता। थल काशी अस गढ़िय विधाता।।
काशी धर्म शंभु अनुशासन। सर्व सुखद सब ताप निपातन।।
हेतु गृहस्थ सर्व सुखराशी। सो विधि धरि उर शास्त्र बकासी।।
इतइ चलै जे शास्त्र विहाई। ते शिव कृपा कबहुं न पाई।।
वर्ण वर्ग मति वेद विधाना। आपु साधि शिव देइ सिख आना।।
कथउं कहां लौं सब जग जाना। एक नाइ सब कथिय पुराना।।

देश धर्म अनुकूल शिव, बनि चलि नीति चलाइ।
गृह आश्रम साधन लगेउ, जो जग दोष दुराइ।।107।।

पसरी नगर मनोहर बाता। भा सबका आपन कुल नाता।।
पूंछहि सबै प्रेम कुशलाई। मिलहिं यथा आपन घर भाई।।
जे जहं तहं ते एही अन्देशे। मिलि न जाहि शंकर कोउ बेशे।।
हरखि देवगण जहां पधारहि। शिव लीला गुण ज्ञान निहारहिं।।
पूंछहि मुदित जगत पितु माई। कुशलाई जे द्वार सिधाई।।
साधहिं लोक विचार मनुज के। लोक अनुकूल नुकूल जगत के।।
शिव महिमा पसरी चहुं ओरी। परम गृही शिव काशी खोरी।।
दधि दुर्वा रोचन फल फूला। नव तुलसी दल मंगल मूला।।
भरि भरि थाल सजाइ भामिनी। शिव सेवहिं बनि गृही साधिनी।।
गृह आश्रम जे गृही समेता। आपु साध सम कृपानिकेता।।
पावइ लोक सुलभ परिवारा। होइ समर्थ सफल आचारा।।
पूरण मनोभिलासा वाके। बनु सब ठौरे खोइ व्यथा के।।
जाकी यथा भावना भारी। मिलु शिव कृपा ताहि नुहारी।।
पुर काशी गंगा जल नीरा। बहहिं सुपावन त्रिविध समीरा।।
काशी नगर नाथ जग जानी। भई सकल शोभा कै खानी।।
तहां उतरु नभ शक्ति दिनेशा। जहां धाम जग वन्द्य महेशा।।
स्वर्ग नुहारेउ काशी सोहा। दीखु सुना जिन तिन मन मोहा।।

गिरिजापति बोले बैन, यदपि प्रिय कैलास।
पर काशी लागत अइस, जेस सुख पूरण आश।।108।।

जन्म भूमि काशी हम मानिय। तासु व्यवस्था ता ढंग सानिय।।
अति प्रिय मोहि इहां कै बासी। होहीं धरमशील सुखराशी।।
जन्म भूमि अनुराग न काहू। जे सुनि ते काशी चलि आहू।।
बनु काशी जगती मन भावन। सुर मुनि वन्दित परम सुपावन।।
सिद्ध प्रदायक भव सुख दायक। भैरव काल धरा जेहि नायक।।
ऊंच नीच तहं लोक भलाई। होन लगिय शंकर प्रभुताई।।
साधत गृह आश्रम व्रत भारी। कह तिय ते शिव नर अनुहारी।।
का सुधि पाछ अबहुं मन हरनी। सुनि मुस्काइ कथिय जग जननी।।
सब सुधि स्वामी कृपा तुम्हारी। जीवन राखु जगत अनुहारी।।
भूलहु पाछिल दोष हजारन। कीजे आगिल शुभ व्रत धारन।।
जेहि विधि होइ देव हित लोका। सब तजि नाथ विलोकहु वोका।।
प्रीति परस्पर प्रेम सुबानी। करि गृहस्थ हित शंभु भवानी।।
धर्म गृहस्थ कर्म शिव गिरिजा। सुनिय सुनाइ जनम भर सिरिजा।।
बाढ़हि पुत्र पौत्र परिवारा। सुमति सनेह सुखद सदचारा।।
जेहि घर पाठ निरन्तर होई। दारिद जाइ बिधुन भव खोई।।
जाइ रोग दुख ताप वियापा। उतरइ सुख सन्तोष अमापा।।
इहि सम दूज चरित नहि आना। हरखहिं गृहि ते कृपानिधाना।।
मुद मंगल मय मंजुल खानी। गृह गुन गाथ महेश भवानी।।

वेद शास्त्र ऋषि नीति पथ, गिरिजापति कह साध।
गृही तपोवन धर्म बड़, हरु हर भूल पराध।।109।।
सहित शिवा शंकर व्रती, मने कर्म जा ध्यान।
सकल देव कृपा करहिं, ब्रह्म वचन अनुदान।।110।।
सुखद स्रोत मंगलकरन, चित चिन्तन मन रूप।
पद वन्दउं युग देव के, होहु प्रभु अनुरूप।।111।।

इति श्री मद् शिवम शक्ति कथायां
सकल कलिकलुषविध्वंसने तृतीय अध्यायः
;सृष्टि खण्डः समाप्तःद्ध